# केन्द्रीय विद्यालय संगठन

# जबलपुर संभाग

# अध्ययन सामग्री

**विषय - हिन्दी केन्द्रिक**

**कक्षा–ग्यारहवीं**

**2012-13**

# केन्द्रीय विद्यालय संगठन:जबलपुर संभाग

## सहायक–सामग्री, कक्षा –११वीं (हिंदी केन्द्रिक) 2012-13.

### मुख्य संरक्षक
मान्नीय श्री अविनाश दीक्षित, आई.डी.ए.एस.
आयुक्त, के.वि.सं (मुख्यालय), नई दिल्ली

### संरक्षक
श्री वी.के. श्रीवास्तव
उपायुक्त, के.वि.सं, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

### कार्यशाला निदेशक
श्रीमती पीबीएस उषा
सहायक आयुक्त, के.वि.सं, क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर

### स्थल–निदेशक
डॉ ए.के. पाण्डेय
प्राचार्य के.वि.1 जीसीएफ,जबलपुर

### *संयोजक*
*डॉ कामेश्वर तिवारी*
*प्राचार्य , के.वि. गढ़ा–जबलपुर*

### निर्माण समिति के सदस्य
1 श्री चक्रधर दुबे, के.वि.सीओडी,जबलपुर
2 श्री विजय कुमार सोनी, केविओएफ,कटनी
3 डॉ. (श्रीमती) कृष्णा दुबे, केवि सिवनी
4 डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा, के.वि.एन के जे कटनी
5. श्री शिखर चन्द जैन, केवि ढाना

कार्यशाला स्थल– के.वि.क्र.1 जीसीएफ, जबलपुर
दिनांक 16 से 18 अगस्त 2012

# प्रस्तावना

इस सहायक सामग्री का निर्माण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निर्धारित कक्षा ग्यारहवी (हिंदी केन्द्रिक ) के नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर किया गया है । इस सहायक सामग्री में दो आदर्श प्रश्न पत्र ( मॉडल प्रश्नपत्र), प्रश्नपत्र प्रारूप (ब्लू प्रिंट) तथा काव्यांश और गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर, काव्यांश के सौंदर्य बोध पर प्रश्नोत्तर तथा बोधात्मक प्रश्नों के साथ–साथ उत्तर संकेत एवं अंक–योजना का समावेश किया गया है । एक आदर्श प्रश्न पत्र हल सहित, सी.बी.एस.ई. के दिशानिर्देशों और नवीन पाठ्यक्रमानुसार दिया गया है।

विद्यार्थियों को सुझाव दिया जाता है कि वे इस सहायक सामग्री को ध्यानपूर्वक पढ़ें । इसका नियमित अध्ययन और अभ्यास हिंदी में अच्छे अंक प्राप्त करने में सहायक होगा ।

संयोजक के निष्ठापूर्ण एवं समर्पित प्रयास तथा सहायक सामग्री का निर्माण व समीक्षा करने वाले विषय शिक्षक प्रशंसा के पात्र हैं ।

श्री वी.के. श्रीवास्तव
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय, जबलपुर संभाग (म.प्र.)

# 5. हिंदी (केंद्रिक)

## कोड सं. 302

**कक्षा–11** **पूर्णांक–100**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) | अपठित बोध (गद्यांश और काव्यांश–बोध) | 10 +5 | 15 |
| (ख) | रचनात्मक लेखन (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन) | | 25 |
| (ग) | निर्धारित पुस्तकें (अभियक्ति और माध्यम) : **आरोह** (भाग–1) | 20+15 | 35 |
| | पाठय पुस्तक : **वितान** (भाग–1) | | 15 |
| (घ) | मौखिक अभिव्यक्ति | | 10 |

**क) अपठित बोध :** **15**

1. अपठित काव्यांश – बोध (काव्यांश पर आधारित पाँच लघूत्तरात्मक प्रश्न) 05

2. अपठित गद्यांश – बोध (गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर लघूत्तरात्मक प्रश्न 10

**(ख) रचनात्मक लेखन : (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन)** **15+10** **25**

रचनात्मक लेखन पर दो प्रश्न

3. • निबंध (विकल्प सहित) 10

4. • कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05

5. **'अभिव्यक्ति और माध्यम'** के आधार पर जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता की विविध विधाओं पर दो प्रश्न (1X5)

   • आयाम पर पांच लघूत्तरात्मक प्रश्न

6. फीचर लेखन रिपोर्ट / आलेख (जीवन–संदर्भों से जुड़ी घटनाओं और स्थितियों पर) 05

**ग आरोह (भाग– 1)** **35**

**(काव्य–भाग)** 20

7. **दो** काव्यांशों मे से किसी **एक** पर अर्थग्रहण से संबधित चार प्रश्न (2+2+2+2) 8

8. **दो** में से **एक** काव्यांश के सौंदर्यबोध पर **दो** प्रश्न (3+3) 06

9. कविता की विषय–वस्तु पर आधारित तीन लघूत्तरात्मक प्रश्न (2+2+2) 06

**(गद्य–भाग)** 15

10. **दो** में से **एक** गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण से संबंधित तीन प्रश्न (2+2+2) 06

11. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित **चार** में से **तीन** बोधात्मक प्रश्न (3+3+3) 09

12. पाठों की विषयवस्तु पर आधारित **चार** में से **तीन** लघूत्तरात्मक प्रश्न (3+3+3) 9

13. विषयवस्तु पर आधारित **दो** में से **एक** निबंधात्मक प्रश्न 6

## घ मौखिक परीक्षा 10 अंक

**श्रवण (सुनना)**: वर्णित या पठित सामग्री को सुनकर अर्थग्रहण करना, वार्तालाप, वाद–विवाद, भाषण, कवितापाठ आदि को सुनकर समझना, मूल्यांकन करना और अभिव्यक्ति के ढंग को समझना। 5

**बोलना**: भाषण, सस्वर कविता–पाठ, वार्तालाप और उसकी औपचारिकता, कार्यक्रम–प्रस्तुति, कथा–कहानी अथवा घटना सुनाना, परिचय देना, भावानुकूल संवाद–वाचन। 5

### वार्तालाप की दक्षताएँ

टिप्पणी: वार्तालाप की दक्षताओं का मूल्यांकन निरंतरता के आधार पर परीक्षा के समय होगा। निर्धारित 10 अंको में से 5 श्रवण (सुनना) के मूल्यांकन के लिए और 5 भाषण (बोलना) के मूल्यांकन के लिए होंगे।

**श्रवण (सुनना) टिप्पणी का मूल्यांकन** :

परीक्षक किसी प्रासंगिक विषय पर एक अनुच्छेद का स्पष्ट वाचन करेगा। अनुच्छेद, तथ्यात्मक या सुझावात्मक हो सकता है। अनुच्छेद लगभग 250 शब्दों का होना चाहिए। परीक्षक/अध्यापक को सुनते–सुनते परीक्षार्थी अलग कागज़ पर दिए हुए श्रवण–बोध के अभ्यासों को हल कर सकेंगे।

अभ्यास रिक्तस्थान–पूर्ति, बहुविकल्पी अथवा सही–गलत का चुनाव आदि विधाओं में हो सकते हैं। आधे–आधे अंक के 10 परीक्षण–प्रश्न होंगे।

**मौखिक अभिव्यक्ति (बोलना) का मूल्यांकन**:

1. **चित्रों के क्रम पर आधारित वर्णन**: इस भाग में अपेक्षा की जाएगी कि विवरणात्मक भाषा का प्रयोग करें।
2. **किसी चित्र का वर्णन**: चित्र लोगों या स्थानों के हो सकते हैं।
3. **किसी निर्धारित विषय पर बोलना,** जिससे विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने व्यक्तिगत अनुभव का प्रत्यास्मरण कर सके।
4. कोई कहानी सुनाना या किसी घटना का वर्णन करना।

**टिप्पणी** :

परीक्षण से पूर्व परीक्षार्थी को कुछ तैयारी के लिए समय दिया जाए।

- विवरणात्मक भाषा में वर्तमान काल का प्रयोग अपेक्षित है।
- निर्धारित विषय परीक्षार्थी के अनुभव–जगत के हों जैसे

  कोई चुटकला या हास्य प्रसंग सुनाना।

  हाल में पढ़ी पुस्तक या देखे सिनेमा की कहानी सुनाना।

जब परीक्षार्थी बोलना आरंभ कर दे तो परीक्षक कम से कम हस्तक्षेप करें।

## कौशलों के अंतरण का मूल्यांकन

**(इस बात का निश्चय करना कि क्या विद्यार्थी में श्रवण और वाचन की निम्नलिखित योग्यताएँ हैं।)**

| श्रवण (सुनना) | वाचन (बोलना) |
|---|---|
| **विद्यार्थी में–** | **विद्यार्थी –** |
| 1. परिचित संदर्भों में प्रयुक्त शब्दों और पदों को समझने की सामान्य योग्यता है किंतु वह सुसबंद्ध आशय को नहीं समझ पाता। | 1. केवल अलग–अलग शब्दों और पदों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है किन्तु एक सुसंबद्ध स्तर पर नहीं बोल सकता। |
| 2. छोटे संबद्ध कथनों को परिचित संदर्भो में समझने की योग्यता है। | 2. परिचित संद्र्भो में केवल छोटे संबद्ध कथनों का सीमित शुद्धता से प्रयोग करता है। |
| 3. परिचित या अपरिचित दोनों संदर्भों में कथित सूचना को स्पष्ट समझने की योग्यता है। | 3. अपेक्षाकृत दीर्घ भाषण में अधिक जटिल कथनों के प्रयोग की योग्यता प्रदर्शित करता है,<br>अभी भी कुछ अशुद्धियाँ करता है, जिससे प्रेषण में रुकावट आती है। |
| 4. दीर्घ कथनों की श्रृंखला को पर्याप्त शुद्धता से समझने और निष्कर्ष निकाल सकने की योग्यता है। | 4. अपरिचित स्थितियों में विचारों को तार्किकता से संगठित कर धारा–प्रवाह रूप में प्रस्तुत करता है। वह ऐसी गलतियाँ करता है जिनसे प्रेषण में रूकावट नहीं आती। |
| 5. जटिल कथनों के विचार–बिंदुओं को समझने की योग्यता प्रदर्शित करने की क्षमता है। वह उद्देश्य के अनुकूल सुनने की कुशलता प्रदर्शित करता है। | 5. उद्देश्य और श्रोता के लिए उपयुक्त शैली को अपना सकता है, ऐसा करते समय वह केवल मामूली गलतियाँ करता है। |

**निर्धारित पुस्तकें**:

(i) **आरोह भाग–1** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(ii) **वितान भाग–1** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

(iii) **अभिव्यक्ति और माध्यम** एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

# प्रश्न–पत्र प्रारूप

## हिंदी–केंद्रिक

## कक्षा–ग्यारहवीं

समयः 3 घंटे पूर्णांक– 90

| प्रश्नों के प्रकार | अपठित बोध | लेखन | साहित्य | विशेष टिप्पणी |
|---|---|---|---|---|
| अतिलघूत्तरात्मक | अपठित काव्यांश 5(5)<br>अपठित गद्यांश 10(5) | | | पठन, भावबोध व लेखन संबंधी |
| लघूत्तरात्मक | | जनसंचार 5(1) | काव्य–अर्थग्रहण 8(4)<br>काव्य–सौंदर्य बोध 6(2)<br>काव्य–विषयवस्तु 6(3)<br>गद्य–अर्थग्रहण 6(3)<br>पूरक–विचार/संदेश 9(3) | अवबोध, पठन व लेखन<br>अवबोध, पठन व लेखन<br>अवबोध, पठन व लेखन<br>अवबोध, पठन व लेखन<br>अवबोध, पठन व लेखन |
| निबंधात्मक प्रश्न | | निबंध 10(1)<br>पत्र 5(1)<br>फीचर 5(1) | पूरक–विषयवस्तु 6(1) | लेखन व अभिव्यक्ति<br>लेखन व अभिव्यक्ति<br>लेखन व अभिव्यक्ति |
| बोधात्मक | | | गद्य–विषयवस्तु 9(3) | भावग्रहण अवबोध व लेखन |

नोटः प्रश्न संख्या कोष्ठक के भीतर व अंक कोष्ठक के बाहर हैं।

१० अंक की मौखिक परीक्षा शिक्षक विद्यालय स्तर पर स्वयं आयोजित करेंगे।

# अध्ययन सामग्री
# कक्षा ग्यारहवीं (हिंदी केन्द्रिक)
# खण्ड–क (अपठित गद्यांश)

**निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–(10 अंक)**

1. हर मनुश्य की अपनी कुछ कल्पनाएँ होती हैं। कल्पना करने और सपने देखने में फर्क है। कल्पना में उत्सुकता जुड़ने के साथ यदि मनुश्य अपनी इन्द्रियों पर संयम न रखे तो यहीं से प्रलोभन आरम्भ होता है। जीवन में प्रलोभन आया और नैतिक दृश्टि से आप ज़रा भी कमज़ोर हुए तो पतन की पूरी सम्भावना बन जाती है। देखते ही देखते आदमी विलासी, नशा करने वाला, आलसी, भोगी हो जाता है। प्रलोभन इन्द्रियों को खींचते हैं। इनका कोई स्थायी आकार नहीं होता, न ही कोई स्पश्ट स्वरूप होता है। इनके इशारे चलते हैं और इन्द्रियाँ स्वतंत्र होकर दौड़ भाग करने लगती हैं। गुलामी इन्द्रियों को भी पसंद नहीं। वे भी स्वतंत्र होना चाहती हैं। दुनिया में हरेक को स्वतंत्रता पसंद है और उसका अधिकार है, लेकिन जिस दिन इन्द्रियों का स्वतंत्रता दिवस भ्गुरू होता है, उसी दिन से मनुश्य की गुलामी के दिन भ्गुरू हो जाते हैं। इन्द्रियाँ सक्रिय हुई और मनुश्य की चिंतनशील सहप्रवृत्तियाँ विकलांग होने लगती हैं। देखा जाए तो बाहरी संसार की वस्तुओं में आकर्शण नहीं होता, लेकिन जब हमारी कल्पना और उत्सुकता उस वस्तु से जुड़ती हैं, तब उसमें आकर्शण पैदा हो जाता है। विवेक का नियंत्रण ढीला पड़ने लगता है, इन्द्रियों के प्रति हमारी सतर्कता गायब होने लगती है और वे दौड़ पड़ती हैं। इन्द्रियों को रोकने के लिए दबाव न बनाएँ । रुचि से उनका सदुपयोग करें। इसमें सत्संग बहुत काम आता है। सत्संग में मनुश्य की इन्दियाँ डायबर्ट होनी भ्गुरू होती हैं। उनके आकर्शण के केन्द्र

बदलने लगते हैं। उसमें एक ऐसी सुगंध होती है कि इन्दियाँ फिर उसी के आसपास मँडराने लगती हैं और यह हमारी कमज़ोरी की जगह ताकत बन जाती है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) इन्दियों के स्वतंत्र होने पर उसका परिणाम क्या होता है ? 2

(ग) इन्दियों के उपयोग की बात किस रूप में की गई है ? 2

(घ) सहप्रवृत्ति से क्या तात्पर्य है ? 2

(ड.) 'आकर्शण' और 'स्वतंत्र' का विलोम भाब्द लिखिए। 2

2 फिजूलखर्ची एक बुराई है, लेकिन ज्यादातर मौकों पर हम इसे भोग, अय्याशी से जोड़ लेते हैं। फिजूलखर्ची के पीछे बारीकी से नज़र डालें तो अहंकार नज़र आएगा। अहं को प्रदर्शन से तृप्ति मिलती है। अहं की पूर्ति के लिए कई बार बुराइयों से रिश्ता भी जोड़ना पड़ता है। अहंकारी लोग बाहर से भले ही गम्भीरता का आवरण ओढ़ लें, लेकिन भीतर से वे उथलेपन और छिछोरेपन से भरे रहते हैं । जब कभी समुद्र तट पर जाने का मौका मिले, तो देखिएगा लहरें आती हैं, जाती हैं और यदि चट्टानों से टकराती हैं तो पत्थर वहीं रहते हैं, लहरें उन्हें भिगोकर लौट जाती हैं। हमारे भीतर हमारे आवेगों की लहरें हमें ऐसे ही टक्कर देती हैं। इन आवेगों, आवेशों के प्रति अडिग रहने का अभ्यास करना होगा, क्योंकि अहंकार यदि लम्बे समय टिकने की तैयारी में आ जाए तो वह नए–नए तरीके ढूँढ़ेगा। स्वयं को महत्त्व मिले अथवा स्वेच्छाचारिता के प्रति आग्रह, ये सब फिर सामान्य जीवनभौली बन जाती है। ईसा मसीह ने कहा है – मैं उन्हें धन्य कहूँगा, जो अंतिम हैं। आज के भौतिक युग में यह टिप्पणी कौन स्वीकारेगा, जब नम्बर वन होने की होड़ लगी है। ईसा मसीह ने इसी में आगे जोड़ा है कि ईश्वर के राज्य में वही प्रथम होंगे, जो अंतिम हैं और जो प्रथम होने की दौड़ में रहेंगे, वे अभागे रहेंगे। यहाँ अंतिम होने का संबंध लक्ष्य और सफलता से नहीं है। जीसस ने विनम्रता, निरहंकारिता को भाब्द दिया है 'अंतिम'। आपके प्रयास व परिणाम प्रथम हों, अग्रणी रहें, पर आप भीतर से अंतिम हों यानि विनम्र, निरहंकारी रहें। वरना अहं अकारण ही जीवन के आनंद को खा जाता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) 'अंतिम' भाब्द का अभिप्राय स्पश्ट करें। 2

(ग) फिजूलखर्ची को सूक्ष्म दृश्टि से क्या कहा गया है ? 2

(घ) अहंकारी व्यक्तियों की किन कमियों की ओर संकेत किया गया है? 2

(ड.) 'निरहंकारिता' भाब्द में उपसर्ग और प्रत्यय छाँटिए । 2

3. जब हम परेशान होते हैं या अपनी किसी गलती के कारण किसी को जिम्मेदार बनाने पर उतारू होते हैं, तब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार जैसे भाब्दों को कोसने लगते हैं। हमें लगता है सारी झंझटें इन्हीं के कारण हैं। इन्हें बुरा कहा जाता है और इनके परिणामों पर खूब प्रवचन होते हैं, लेकिन आधा सच पूरे झूठ से भी खतरनाक है। गुरुनानक देव ने एक जगह कहा है – अंधा–अंधा ठेलिया। अंधे लोग अंधों को ही धक्का दे रहे हैं। ये हमारी मनोवृत्तियाँ हैं और इन्हें ठीक से नहीं समझ पाने के कारण हम अंधों की तरह व्यवहार करने लगते हैं। अपने काम–क्रोध को दूसरे के काम–क्रोध से जोड़ लेते हैं। यही अंधा–अंधा ठेलिया वाला व्यवहार होता है। इन मनोवृत्तियों से काम लिए बिना जिंदगी चल भी नहीं सकती । परमात्मा ने जन्म से हमें इन्हें दे रखा है। इसका मतलब ही है कि इनका कोई न कोई उपयोग जरूर होगा। इसलिए दिमाग ठीक जगह लगाया जाए। क्रोध में जो उत्तेजना होती है, यदि उसे समझ लिया जाए तो उसे उत्साह में बदलना आसान हो जाएगा। उत्साह एक ताकत है। यह एक तरह की सामर्थ्य है। खाली क्रोध कमज़ोरी और नियन्त्रित क्रोध ताकत बन जाता है। लोभ मनुश्य को उन्नति, प्रगति और विकास की ओर ले जाता है। लोभ क्रियाशील भी बनाता है। मोह न हो तो लोभ एक दूसरे के प्रति घातक हो जाए। निर्मोही भाव यदि ठीक से न समझा जाए तो निर्ममता में बदल जाता है। इसलिए इन मनोवृत्तियों को समझना बहुत जरूरी है। इनका सदुपयोग इनकी ताकत से हमें जोड़ता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) मनुश्य अपनी किस अवस्था में किन भाब्दों को कोसने लगता है ? 2

(ग) मनुश्य अंधों की तरह व्यवहार किन स्थितियों में करता है ? 2

(घ) क्रोध को सकारात्मक स्वरूप देने पर वह किस रूप में परिवर्तित हो जाता है ? 2

(ड.) 'क्रियाशील' और 'उत्साह' का विलोम भाब्द लिखिए। 2

4. जीवन में जब भी कोई उपलब्धि होती है तो उसे दो दृश्टि से देखें। सांसारिक उपलब्धि में परिश्रम और समर्पण के साथ क्रमिक स्थितियाँ बनती हैं और तब एक दिन सफलता मिलती है। अध्यात्म में प्रेम और प्रार्थना के साथ स्थितियाँ आरम्भ होती हैं, लेकिन जो उपलब्धि होती है, तब अचानक छलांग–सी लग जाती है। ऐसा लगता है जैसे कोई विस्फोट हो गया हो। यहाँ की सफलता एक हार्दिक दशा है। संसार की सफलता भौतिक स्थिति है। सुंदरकाण्ड में हनुमान जी माता सीता से मिलकर लंका से लौटे और जिन वानरों को समुद्र तट पर छोड़ कर गए थे, उनसे फिर मिले। यहाँ तुलसीदास जी ने लिखा–हरशे सब बिलोक हनुमाना। नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना।। मुख प्रसन्न तन तेज बिराजा। कीन्हेसि रामचंद्र कर काजा।। हनुमान जी को देखकर सब हर्शित हो गए। और वानरों ने अपना नया जन्म समझा। हनुमान जी का मुख प्रसन्न है और भारीर में तेज विराजमान है। ये श्रीरामचन्द्र जी का कार्य कर आए हैं। मिले सकल अति भए सुखारी। तलफत मीन पाव जिमि बारी।। सब हनुमान जी से मिले और बहुत ही सुखी हुये, जैसे तड़पती हुई मछली को जल मिल गया हो। इस समय हनुमान जी के मुख पर प्रसन्नता और तेज था। हनुमान जी बताते हैं कि कितना ही बड़ा काम करके लौटें, अपनी प्रसन्नता को समाप्त न करें। हमारे साथ उल्टा होता है। हम बड़ा और अधिक काम कर लें तो अपनी थकान व चिड़चिड़ाहट दूसरों पर उतारने लगते हैं। इसलिए खुश रहना आसान है, लेकिन दूसरों को खुश रखना कठिन है। हनुमान जी से सीखा जाए – खुश रहें और खुश रखें ।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) जीवन की उपलब्धियों को किन–किन दृश्टियों से देखने की जरूरत है ? 2

(ग) आध्यात्मिक और सांसारिक सफलताओं में क्या अन्तर है ? 2

(घ) प्रस्तुत गद्यांश में निहित संदेश बताइए। 2

(ड.) गद्यांश में निहित उद्देश्य और सामान्य मनुश्य की सोच में क्या अन्तर होता है ? 2

5. घर, घर नहीं हैं; वरन् गृहिणी ही घर कही जाती है। यह बात महाभारत के भाांति पर्व में व्यक्त की गई है । आज भारत के परिवारों में जिन–जिन बातों ने तेजी से प्रवेश किया है, उनमें से एक अशाांति भी है। जो लोग चाहते हों कि हमारे गृहस्थ जीवन में भाांति बनी रहे, उन्हें घर की स्त्रियों को समझना और सम्मान देना होगा। माता संबोधन में भारतीय घरों का अमृत भण्डार भरा हुआ है । जिस घर के केन्द्र में माँ प्रतिश्ठित है समझ लीजिए परमात्मा स्थापित है। दरअसल, जब–जब नारी स्वतंत्रता की बात की गई, हमने उसकी बाहरी प्रतिश्ठा पर ही घ्यान दिया है। स्त्रियों ने भी इसे इसी रूप में लिया और इसीलिए घर से बाहर निकलने को ही नारी का विकास मान लिया गया, लेकिन घरों में स्त्री के आंतरिक विकास की जरूरत हैं, क्योंकि जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण सूत्र उन्हीं के हाथ में हैं और उनमे से एक है संतान को जन्म देना। भास्त्रों में स्पश्ट व्यक्त किया गया है कि भार्या पुरुश का आधा भाग व उसकी श्रेश्ठतम मित्र है। हमने स्त्रियों के बाहरी विकास को लेकर जागरूकता दिखाई, संघर्श किए, लेकिन स्त्री अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा संवेदनाओं के साथ भीतर से जीती है। जीवन जिस रस का नाम है, उसे क्रम से प्राप्त करना पड़ता है। प्रेमपूर्ण जीवन नारियों का सहज स्वभाव हो जाता है। इसको प्रेरित करने और बचाने के लिए स्त्रियों को ध्यान योग के माध्यम से पहले भारीर की आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिए, उसके बाद मन की ओर बढ़ें, फिर आत्मा तक चलें। चौथी अवस्था आती है आनंद की । देखा गया है माताएँ–बहनें ध्यान–योग से कम जुड़ती हैं, लेकिन उनके आंतरिक विकास के लिए यही एक राजपथ है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) गृहस्थ जीवन में भाांति का उपाय क्या है ? 2

(ग) परमात्मा की स्थापना को किस रूप में देखा गया है ? 2

(घ) प्रेमपूर्ण जीवन को प्राप्त करने के लिए नारियों को क्या करना चाहिए। 2

(ड.) 'स्वतंत्रता' और 'जागरूकता' में उपसर्ग–प्रत्यय अलग–अलग कीजिए। 2

# अपठित पद्यांश

**निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (05 अंक)**

1. हे ग्राम–देवता ! नमस्कार !
सोने–चाँदी से नहीं किंतु
तुमने मिट्टी से किया प्यार
हे ग्राम–देवता ! नमस्कार !
जन–कोलाहल से दूर
कहीं एकाकी सिमटा–सा निवास,
रवि–शशि का उतना नहीं
कि जितना प्राणों का होता प्रकाश,
श्रम–वैभव के बल पर करते हो
जड़ में चेतन का विकास
दानों–दानों से फूट रहे
सौ–सौ दानों के हरे हास
यह है न पसीनों की धारा
यह गंगा की है धवल धार
हे ग्राम देवता ! नमस्कार !

(क) कवि ने 'ग्राम देवता' किसे कहा है ? 1

(ख) कवि ग्राम–देवता को नमस्कार क्यों करता है ? 1

(ग) जड़ में चेतन का विकास करने का क्या आशय है ? 1

(घ) कवि ने किसान के निवास स्थान को कहाँ और कैसा बताया है ? 1

(ड़) किसान के पसीने को 'गंगा की धवल धार' क्यों कहा गया है ? 1

2. थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूके ?
छीने न मातृपद किंतु भरत का मुझसे,
हे राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे ?
कहते आते थे, यही सभी नरदेही,
माता न कुमाता, पुत्र कुपुत्र भले ही।
अब कहें सभी यह हाय ! विरुद्ध विधाता,
है पुत्र ! पुत्र ही, रहे कुमाता माता।

(क) पहली पंक्ति में कैकेयी ने ऐसा क्यों कहा –मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके ? 1

(ख) कैकेयी राम से क्या प्रार्थना कर रही है ? 1

(ग) माता और पुत्र के संबंध में क्या उक्ति चली आ रही है ? 1

(घ) यह उक्ति क्यों प्रसिद्ध है ? 1

(ड़) कैकेयी के अनुसार इस लोक प्रसिद्ध उक्ति में क्या परिवर्तन आया है तथा क्यों ?1

3. जिन्दगी को मुस्करा के काट दीजिए,
कश्ट लाख हों मगर न व्यक्त कीजिए।
तनाव के क्षणों को, लगाम दीजिए
हँसी है दवा मधुर का पान कीजिए।
हँस–हँस तनाव को, उखाड़ फेंकिए
लाख–लाख रोगों की एक है दवा
मुस्करा के जीने का, और है मज़ा
चेहरे पर गम की न रेख लाइए।
मुस्करा के बढ़ने, की बात कीजिए।

(क) किसको लगाम देने की बात कही गई है ? 1

(ख) किसको दवा कहा गया है और उसके पान की बात कवि ने क्यों की ? 1

(ग) चेहरे पर क्या न लाने की बात कही गई है ? 1

(घ) लाख–लाख रोगों की दवा किसे कहा गया है ? 1

(ड़) उपर्युक्त पद्यांश का प्रतिपाद्य लिखिए। 1

4. आसरा मत ऊपर का देख
सहारा मत नीचे का माँग,
यही क्या कम तुझको वरदान
कि तेरे अन्तस्तल में राग ;
राग से बाँधे चल आकाश
राग से बाँधे चल पाताल,
धँसा चल अन्धकार को भेद
राग से साधे अपनी चाल।

(क) किस वरदान की बात की गई है ? 1

(ख) राग से कवि का क्या आशय है ? 1

(ग) किस आश्रय पर निर्भर न रहने की बात कही गई है ? 1

(घ) किससे सहारा न माँगने की बात कही गई है ? 1

(ड़) कविता का संदेश स्पश्ट करें। 1

5. मैंने अपना दुख–दर्द, तुमसे नहीं,
लेखनी से कहा था ;
अगर उसने तुम तक नहीं पहुँचाया
तो मैं तुम्हें दोश नहीं देता।
मैंने अपना दुख–दर्द, तुमसे नहीं,
काग़ज़ से कहा था ;
अगर तुमने मुझे नहीं समझा
तो मैं तुम्हें दोश नहीं देता ।

मैंने अपना दुख–दर्द, तुमसे नहीं,
भाब्दों से कहा था ;
अगर तुमने मुझे संवेदना नहीं दी
तो मैं तुम्हें दोश नहीं देता।
मैंने अपना दुख–दर्द, तुमसे नहीं,
काली रातों से कहा था,
गूँगे सितारों से कहा था,
सूने आसमानों से कहा था ;
अगर उनकी प्रतिध्वनि
तुम्हारे अन्तर से नहीं हुई
तो मैं तुम्हें दोश नहीं देता।
राग से साधे अपनी चाल।

(क) कवि ने अपने दुख–दर्द का वर्णन किनके–किनके समक्ष किया है? 1

(ख) कवि को संवेदना किसने नहीं दी? 1

(ग) सितारों को गूँगा क्यों कहा गया है? 1

(घ) 'सूने आसमान' का अभिप्राय स्पश्ट करें। 1

(ड़) 'उनकी प्रतिध्वनि' के माध्यम से कवि ने क्या इंगित किया है ? 1

6. इस भू की पुत्री के कारण भस्म हुई लंका सारी,
सुई नोंक भर भू के पीछे, हुआ महाभारत भारी।
पानी–सा बह उठा लहू था, पानीपत के प्रांगण में,
बिछा दिए पुरयण से भाव में, इसी तरायण के रण में।
भीश चढ़ाया काट गर्दनें या अरि गरदन काटी है,
खून दिया है, मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

(क) लंका के भस्म होने का कारण क्या था ? 1

(ख) महाभारत के पीछे का कारण स्पश्ट करें। 1

(ग) 'पानी–सा बह उठा लहू था'–अभिप्राय स्पश्ट करें। 1

(घ) हमने देश की माटी को कभी किसी को क्यों नहीं दिया ? 1

(ड़) पुरयण और तरायण का अर्थ स्पश्ट करें। 1

नोट :– पुरयण – कमल का पत्ता प्रतीकार्थ ढेर अथवा समूह

तरायण – तराइन का युद्ध

# खण्ड –ख

## रचनात्मक लेखन (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन)

**नोटः–**

**कक्षा 11वीं तथा 12वीं के पाठ्यक्रम में संयुक्त रूप से निर्धारित 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक के निम्नांकित 07 पाठ कक्षा 11वीं के पाठ्यक्रम निर्धारित हैं–**

1. जनसंचार माध्यम ( पाठ–1 )
2. पत्रकारिता के विविध आयाम (पाठ– 2)
3. डायरी लिखने की कला ( पाठ–9)
4. कथा–पटकथा (पाठ –10)
5. कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया (पाठ –14)
6. स्ववृत्त लेखन और रोजगार संबंधी आवेदन पत्र (पाठ–15)
7. भाब्दकोश, संदर्भ–ग्रंथों की उपयोग विधि और परिचय (पाठ–16)

**उक्त सात पाठों में से एक–एक अंक के पाँच प्रश्न पूछे जाएँगे।**

## जनसंचार माध्यम

प्र.1– संचार क्या है ?

उ.– दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं व भावनाओं का आदान–प्रदान ही संचार है। अथवा अनुभवों की साझेदारी ही संचार है।

प्र.2– संचार माध्यम क्या है ?

उ.– संचार की प्रक्रिया को अंजाम देने वाले साधन संचार माध्यम कहलाते हैं।

प्र.3– संचार के प्रमुख तत्त्व कौन–कौन से हैं ?

उ.– संचार की प्रक्रिया में कई चरण या तत्त्व सम्मिलित होते हैं। वे निम्नांकित हैं–

(क) स्रोत या संचारक – संचार प्रक्रिया को प्रारम्भ करनेवाला/बात कहनेवाला।

(ख) कूटीकरण/एनकोडिंग – भावों को भाशा में/शब्दों में बदलने की प्रक्रिया ।

(ग) संदेश – कथ्य

(घ) माध्यम (चैनल) – मौखिक भाब्द, टेलीफोन, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इन्टरनेट व फ़िल्म आदि।

(ड़) प्राप्तकर्त्ता (रिसीवर) – संदेश प्राप्तकर्त्ता, जो कूट भाशा की डी–कोडिंग करता है अर्थात् कथ्य को समझने का प्रयास करता है।

(च) फीडबैक – संदेश प्राप्तकर्त्ता की अच्छी/बुरी प्रतिक्रिया

प्र.4– संचार के प्रमुख प्रकार बताइए।

उ.– वर्गीकरण का प्रथम प्रकार–(02 भेद) मौखिक तथा अमौखिक संचार।

वर्गीकरण का दूसरा प्रकार–(04 भेद)

1. अंतःवैयक्तिक संचार – जहाँ संचारक व प्राप्तकर्त्ता एक ही होता है। जैसे सोचना/विचारना आदि।
2. अंतरवैयक्तिक संचार – जब दो व्यक्ति आमने–सामने संचार करते हैं।
3. समूह संचार – जब हमारा कथन किसी एक व्यक्ति के लिए न होकर एक पूरे समूह के लिए होता है। जैसे – सभा/पंचायत/संसद आदि।
4. जनसंचार – जब समूह से प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी यांत्रिक साधन/तकनीकी के माध्यम से संवाद स्थापित किया जाता है। जैसे अखबार, टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, इन्टरनेट आदि।

प्र.5– जनसंचार की प्रमुख विशेशताएँ बताइए।

उ. – 1. जनसंचार का फीडबैक तुरन्त नहीं मिलता।

2. उसमें श्रोताओं/पाठकों/दर्शकों का दायरा बहुत बड़ा पंचमेल (विविधता भरा) होता है।

3. उसमें प्रसारित संदेश की प्रकृति सार्वजनिक होती है।

4. जनसंचार के लिए औपचारिक संगठन –रेडियो/टीवी चैनल/अखबार की आवश्यकता होती है।

5. इसमें प्रचारित–प्रसारित सामग्री को नियंत्रित व निर्धारित करने के लिए कई द्वारपाल होते हैं। जैसे संपादक /उपसंपादक आदि।

प्र.6– जनसंचार के प्रमुख कार्य बताइए।

उ.– 1. सूचना देना 2. शिक्षित करना 3. मनोरंजन करना 4. एजेंडा तय करना 5 निगरानी करना 6. विचार–विमर्श के लिए मंच उपलब्ध कराना।

प्र.7– भारत में पत्रकारिता का प्रारम्भ कब हुआ ?

उ.– सन् 1870 में जेम्स ऑगस्ट हिकी के 'बंगाल गजट' से ।

प्र.8– हिंदी का पहला पत्र कौन–सा था ?

उ.– हिंदी का पहला पत्र 'उदंत मार्तण्ड' सन् 1826 में कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर के संपादन में प्रकाशित हुआ।

प्र.9– आजादी के पूर्व के प्रमुख समाचार पत्र/पत्रिकाओं के नाम बताइए।

उ.– केसरी, हिन्दुस्तान, हंस, कर्मवीर, आज, प्रताप, प्रदीप और विशाल भारत आदि।

प्र.10– आजादी के पूर्व के प्रमुख पत्रकार कौन–कौन से थे ?

उ. – गांधीजी, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लोकमान्य तिलक, मदनमोहन मालवीय, गणेश भांकर विद्यार्थी, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, बाबूराव–विश्णुराव पराड़कर, प्रताप नारायण मिश्र, शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी आदि।

प्र.11– आजादी के बाद के भारत के प्रमुख हिंदी अखबारों के नाम बताइए।

उ. – नवभारत टाइम्स, जनसत्ता, नई दुनिया, राजस्थान पत्रिका, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण आदि एवं पत्रिकाओं में धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दिनमान, रविवार, इंडिया टुडे व आउट लुक आदि।

प्र.12– आजादी के बाद के प्रमुख हिंदी पत्रकारों के नाम बताइए।

उ. – अज्ञेय, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, भयाम मनोहर जोशी, राजेन्द्र माथुर, प्रभाश जोशी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, सुरेन्द्र प्रताप सिंह आदि।

प्र.13 –रेडियो का आविश्कार कब और किसने किया ?

उ.– 1895 में इटली के जी. मार्कोनी ने ।

प्र.14 – ऑल इंडिया रेडियो (आकाशवाणी) की स्थापना कब हुई। इसकी व्यापकता बताइए।

उ.– सन् 1936 में। 24 भाशाओं और 146 बोलियों में प्रसारित कार्यक्रमों का लाभ देश की 96 प्रतिशत आबादी उठाती है।

प्र.15– एफ.एम. रेडियो की भ्रुरुआत भारत में कब हुई ?

उ. – सन् 1993 में

प्र.16– वर्तमान में आकाशवाणी व दूरदर्शन पर किसका नियंत्रण है ?

उ. – 'प्रसार भारती' नामक स्वायत्तशासी निकाय का।

प्र.17 – भारत में टेलीविजन की भ्रुरुआत कब हुई ?

उ. – 15 सितम्बर 1959 में (यूनेस्को की एक परियोजना के अंतर्गत प्रायोगिक रूप में )

15 अगस्त 1965 से आकाशवाणी के ही अंतर्गत विधिवत रूप से टेलीविजन सेवा प्रारंभ हुई।

प्र.18 – दूरदर्शन पृथक् विभाग कब बना ?

उ.– 01 अप्रेल 1976 से ।

प्र.19– सिनेमा का आविश्कार किसने व कब किया ?

उ. – थॉमस अल्वा एडीसन के द्वारा सन् 1883 में 'मिनेटिस्कोप की खोज' के साथ ही सिनेमा अस्तित्व में आया। विश्व की पहली फ़िल्म ' द अरायवल ऑफ ट्रेन' 1894 में फ्रांस में बनी।

प्र.20– भारत की पहली फ़िल्म कौन–सी थी व कब बनी ?

उ. – राजा हरिशचंद्र 1913 में बनी । यह मूक फ़िल्म थी।

प्र.21– भारत की पहली बोलती फिल्म कौन–सी थी । व कब बनी?

उ.– सन् 1931 में निर्मित 'आलमआरा' (आर्देशिर ईरानी द्वारा निर्देशित)।

प्र.22 –इंटरनेट की विशेशताएँ बताइए।

उ.– इंटरनेट में प्रिंट मीडिया, रेडियो, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के भी सारे गुण मौजूद हैं। यह एक 'अन्तर क्रियात्मक' (इंटरेक्टिव) माध्यम है। इसमें आप मूक दर्शक/श्रोता नहीं हैं।

## पत्रकारिता के विविध आयाम

प्र.1 – 'पत्रकारिता' क्या है?

उ.– सूचनाओं को संकलित और संपादित करके आम पाठकों तक पहुँचाने का कार्य ही पत्रकारिता है।

प्र.2– किसी घटना के 'समाचार' बनने के लिए उसमें कौन–कौन से तत्त्व आवश्यक हैं ?

उ.– नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव, टकराव या संघर्श, महत्त्वपूर्ण लोग उपयोगी जानकारी, अनोखापन, पाठकवर्ग व नीतिगत ढाँचा आदि बातें निश्चित करती हैं कि कोई घटना समाचार है या नहीं।

प्र.3– समाचारों के संपादन में किन प्रमुख सिद्धान्तों का पालन जरूरी है ?

उ.– तथ्यपरकता, वस्तुपरकता, निश्पक्षता, संतुलन व स्रोत की जानकारी जैसे सिद्धान्तों का पालन संपादन में जरूरी है।

प्र.4– पत्रकारिता के प्रमुख प्रकारों के नाम बताइए।

उ.– खोजपरक, वॉचडॉग, एडवोकेसी आदि।

प्र.5– 'डैडलाइन' क्या है ?

उ.– किसी समाचार माध्यम में समाचार को प्रकाशित/प्रसारित होने के लिए प्राप्त होने की आखिरी समय–सीमा डैडलाइन कहलाती है। आमतौर पर डैडलाइन के बाद प्राप्त समाचार के प्रकाशित/प्रसारित होने की संभावना कम ही होती है।

प्र.6– पत्रकारिता के विविध आयाम कौन–कौन से हैं ?

उ.– समाचारों के अतिरिक्त समाचार पत्रों में अन्य विविध सामग्री भी प्रकाशित होती है। वे ही उसके विविध आयाम हैं। जैसे संपादकीय पृश्ठ (संपादकीय अग्रलेख पाठकों के पत्र आदि), फोटो पत्रकारिता, कार्टून कोना रेखांकन व कार्टोग्राफ आदि।

प्र.7–पेज–थ्री पत्रकारिता से क्या आशय है ?

उ.– फैशन, अमीरों की पार्टियाँ व जाने माने लोगों (सेलीब्रिटीज़) के निजी–जीवन से संबंधित सामग्री का प्रकाशन पेज–थ्री पत्रकारिता है।

प्र.8– पीत–पत्रकारिता क्या है ?

उ.– पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफ़वाहों, व्यक्तिगत आरोप–प्रत्यारोपों, प्रेम–संबंधों, भंडाफोड़ और फिल्मी गपशप जैसी सामग्री के प्रकाशन को पीत–पत्रकारिता कहते हैं।

## डायरी लिखने की कला

प्र.1– डायरी क्या है ?

उ.– नितांत निजी स्तर पर घटित घटनाओं और तत्संबंधी बौद्धिक व भावनात्मक प्रतिक्रियाओं का लेखा–जोखा, जिसे लेखक स्वयं अपने लिए ही भाब्दबद्ध करता है– डायरी कहलाता है।

प्र.2– डायरी लेखन की क्या उपयोगिता है ?

उ.– किसी बात /घटना/विचार/अनुभव को हम डायरी में भाब्दबद्ध करके यह सुनिश्चित करते हैं कि वह विस्मृति की शिकार न हो ।

प्र.3– द्वितीय विश्वयुद्ध के नाज़ी अत्याचारों के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में किसकी डायरी प्रसिद्ध है ?

उ.– एनी फ्रैंक एक यहूदी किशोरी की डायरी, जिसमें 1942–44 के दरमियान नाज़ी अत्याचारों का एक किशोर मन द्वारा दर्ज विवरण रोंगटे खड़े कर देना वाला है ।

प्र.4– कुछ प्रसिद्ध भारतीय/हिंदी डायरी लेखकों के बारे में बताइए।

उ.– मोहन राकेश की डायरी, रमेशचंद्र भााह की डायरी के अतिरिक्त रामवृक्ष बेनीपुरी की ''पैरों में पंख बाँधकर'' राहुल सांकृत्यायन के 'रूस में पच्चीस मास' सेठ गोविन्ददास की सुदूर दक्षिण–पूर्व, कर्नल सज्जन सिंह की 'लद्दाख यात्रा की डायरी' व मुक्तिबोध की एक साहित्यिक की डायरी' आदि कृतियाँ प्रसिद्ध हैं।

## कथा–पटकथा लेखन

प्र.1– 'पटकथा' क्या है ?

उ.– परदे (टीवी/सिनेमा) पर दिखाई जाने वाली वह कथा, जिसमें अभिनेताओं को संवादों के साथ–साथ अपनी–अपनी भूमिका की बरीकियों की जानकारी तथा कैमरे के पीछे काम करने वाले तकनीशियनों व सहायकों को भी अपने–अपने विभागों के लिए महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ मिलती हैं।

प्र.2– 'फ़्लैशबैक' किसे कहते हैं ?

उ.– वह तकनीक, जिसमें आप वर्तमान घटनाक्रम को बीच में ही छोड़कर अतीत में घटी घटना को दिखाते हैं और फिर वर्तमान में लौट आते हैं।

प्र.3–'फ़्लैश फॉरवार्ड किसे कहते हैं ?

उ.–'फ़्लैश फॉरवार्ड में हम भविश्य में होने वाली घटना को वर्तमान में ही (हादसा होने से पहले ही) दिखा देते है और फिर वर्तमान में लौट आते हैं।

## कार्यालयी लेखन और प्रक्रिया

### पाठ की कुछ महत्त्वपूर्ण बातें

1. प्रत्येक विशय से संबंधित एक फाइल होती है।
2. विशय से संबंधित जो पत्र या प्रस्ताव बाहरी व्यक्तियों या दूसरे कार्यालयों से प्राप्त होता है उसे फाइल की दाहिनी ओर रखा जाता है। तथा उस विशय या प्रस्ताव पर जो टिप्पणियाँ/मन्तव्य किस कार्यालय में लिखे जाते हैं वे बाईं और लगे पृश्ठों पर लिखे जाते हैं अर्थात् फाइल के बाईं ओर का हिस्सा टिप्पण के लिए तथा दाहिनी ओर का पत्र–व्यवहार के लिए होता है।

प्र.1– कार्यालयी लेखन के विविध प्रकारों के नाम बताइए–

उ.– 1. औपचारिक पत्र 2. मुख्य टिप्पण 3. आनुशंगिक टिप्पण

4. अनुस्मारक / स्मरण पत्र 5. अर्द्धसरकारी पत्र (डी ओ लेटर) 6. कार्यसूची(एजेंडा)

7. कार्यवृत्त(मिनिट्स) 8. प्रेस विज्ञप्ति

**नोट– ऊपर लिखे कार्यालयी लेखन के विविध प्रकारों से संबंधित प्रत्येक प्रकार के लेखन के विशय में ध्यान देने योग्य बातों की जानकारी के लिए मूलतः 'अभिव्यक्ति और माध्यम' पुस्तक का अवलोकन करें।**

प्र.2– औपचारिक पत्र से क्या तात्पर्य है ?

उ.– जो पत्र प्रायः एक कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय से दूसरे कार्यालय, विभाग अथवा मंत्रालय को भेजे जाते हैं, औपचारिक पत्र कहलाते हैं।

प्र.3– टिप्पण किसे कहते हैं ? यह कितने प्रकार की होती है ?

उ.– किसी विचाराधीन पत्र अथवा प्रकरण को निपटाने के लिए उस पर जो राय, मन्तव्य, आदेश अथवा निर्देश दिया जाता है वह टिप्पण कहलाता है। यह दो प्रकार की होती है– मुख्य टिप्पण व आनुशंगिक टिप्पण।

प्र.4– मुख्य टिप्पण किसे कहते हैं ?

उ.– प्रारम्भिक टिप्पण मुख्य टिप्पण कहलाता है, जिसे प्रायः सहायक स्तर पर लिखा जाता है।

प्र.5– आनुशंगिक टिप्पण किसे कहते है ?

उ.– सहायक द्वारा लिखे टिप्पणी जब अधिकारी के पास पहुँचती है तो वह अधिकारी उसे पढ़कर अपना मन्तव्य लिखता है वह आनुशंगिक टिप्पणी कहलाती है।

प्र.6– स्मरण पत्र / अनुस्मारक पत्र किसे कहते हैं। ?

उ.– जब किसी पत्र / ज्ञापन इत्यादि का उत्तर समय पर प्राप्त नहीं होता तो याद दिलाने के लिए अनुस्मारक भेजा जाता है।

प्र.7– अर्द्धसरकारी पत्र (डी ओ लेटर) किसे कहते हैं ?

उ.– जब कोई एक अधिकारी दूसरे संबंधित अधिकारी को व्यक्तिगत स्तर पर जानता हो तब मैत्री भाव व अनौपचारिकता से युक्त जो पत्र कार्यालय से संबंधित विशय पर लिखा जाता है उसे अर्द्धसरकारी पत्र कहते है।

प्र.8– कार्यसूची या एजेंडा क्या है ?

उ.– किसी भी संस्था की औपचारिक बैठक में चर्चा के लिए निर्धारित विशयों की अग्रिम जानकारी देनेवाला दस्तावेज कार्यसूची कहलाता है। इसे बैठक की सूचना के साथ ही सदस्यों को भेजा जाता है ताकि वे पूरी तैयारी से आ सकें।

प्र.9– कार्यवृत्त या मिनिट्स किसे कहते है ?

उ.– किसी बैठक की कार्यसूची में रेखांकित विशयों पर हुए विचार–विमर्श व निर्णयों के विवरण को कार्यवृत्त कहा जाता है।

प्र.10– प्रेस–विज्ञप्ति किसे कहते हैं?

उ.– कोई संस्थान या व्यक्ति जब किसी विशय या बैठक में लिए गए निर्णयों को जन–सामान्य तक पहुँचाना चाहता है तो वह 'प्रेस विज्ञप्ति' ज़ारी करता है।

प्र.11– परिपत्र या सर्कुलर किसे कहते है ?

उ.– संस्थान/कार्यालयों द्वारा लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए 'परिपत्र' ज़ारी किया जाता है, जिसमें निर्णय को कार्यान्वित करने के निर्देश होते हैं।

## स्ववृत्त (बायोडेटा) लेखन तथा रोजगार संबंधी आवेदन पत्र

प्र.1– स्ववृत्त क्या है ? उसमें क्या विशेशताएँ होनी चाहिए ?

उ.– किसी व्यक्ति विशेश द्वारा अपने बारे में सूचनाओं का सिलसिलेवार संकलन ही स्ववृत्त कहलाता है। इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्त्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जो नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छबि प्रस्तुत करता है।

प्र.2– स्ववृत्त में किन–किन बातों का समावेश होना चाहिए।

उ.– स्ववृत्त में अपनी पूरा परिचय, पता, सम्पर्क सूत्र(टेलीफोन, मोबाइल, ई–मेल आदि), भौक्षणिक व व्यावसायिक योग्यताओं के सिलसिलेबार विवरण के साथ–साथ अन्य संबंधित योग्यताओं, विशेश उपलब्धियों, कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों का उल्लेख होना चाहिए।

एक–दो ऐसे सम्मानित व्यक्तियों के विवरण, जो उम्मीदवार के व्यक्तित्व व उपलब्धियों से परिचित हों, का समावेश भी होना चाहिए।

**नोट– रोजगार संबंधी आवेदन पत्र के फॉरमैट के लिए पाठ्य पुस्तक का अवलोकन करें।**

**भाब्दकोश, संदर्भ ग्रंथों की उपयोग की विधि और परिचय**

**भाब्दकोश देखने की विधि** – भाब्दकोश में सम्मिलित भाब्द वर्णमाला के वर्णों के क्रम में व्यवस्थित रहते हैं। अतः भाब्दकोश देखने के पूर्व हमें वर्णमाला के ज्ञान के साथ–साथ भाब्द का वर्ण–विच्छेद करना सीखना आवश्यक है।

भाब्दकोश में भाब्दों को इस वर्ण–अनुक्रम में दिया जाता है– अं, अ, आं, आ, इं, इ, ईं, ई, उं,उ, ऊं, ऊ, ऋ, एं, ए, ऐं, ऐ, ओं, ओ, औं, औ। इसके पश्चात् क से ह तक के वर्ण क्रम के अनुसार।

संयुक्ताक्षरों के विशय में यह बात विशेश ध्यान रखने योग्य है कि यदि मिले हुए वर्ण ऊपर–नीचे लिखे हैं तो ऊपर वाला वर्ण पहले स्थान पाएगा तथा नीचे वाला वर्ण बाद में स्थान पाएगा। एवं संयुक्ताक्षर की मात्रा नीचे वाले वर्ण की मानी जाएगी। जैसे–

1. भ्युद्धि = ( भ्+उ) + (द्+ध्+इ)
2. प्रार्थना = (प्+र्+आ) +(र्+थ्+अ)+(न्+आ)
3. द्युति = (द्+य्+उ) +(त्+इ)

**वर्ण –विच्छेद** में मात्रा वाला स्वर सदा ही उस व्यंजन के बाद आता है जिस पर मात्रा लगी हो (भले ही मात्रा पीछे से लगी हो।

जैसे– सि = स्+इ

सी = स्+ई

आधे अक्षरों से पूर्व लिखी 'इ' की मात्रा उस अक्षर की न होकर अगले व्यंजन की होती है।

जैसे –स्थिति =स् थि ति

यदि मिले हुए वर्ण (संयुक्ताक्षर) ऊपर नीचे न होकर बराबर ऊँचाई पर लिखे हैं तो वर्णों का क्रम वही होगा जो दिखाई दे रहा है।

जैसे – भाब्द = भा+ब्+द्, पम्प = प+म्+प, द्वार = द्+वा+र (न कि ' व्+दा+र)

निम्नांकित संयुक्ताक्षरों के वर्ण विच्छेद पर विशेश ध्यान दें–

क्ष =क्+श्+अ त्र = त्+र्+अ ज्ञ = ज्+ञ्+अ द्य=द्+य्+अ

द्म = द्+म्+अ ह्य = ह्+य्+अ क्र = क्+र्+अ र्क = र्+क्+अ

अं तथ अः को स्वरों में नहीं गिना जाता है। अतः भाब्दकोश में इनके लिए ओ,औ के बाद अलग से खंड नहीं होता। अनुस्वार ( बिंदु) तथा अनुनासिक (चंद्रबिंदु) वाले वर्ण भाब्द कोश में सबसे पहले आएँगे। जैसे – 'अंकुर' तथा 'अकुलाहट' में से अंकुर पहले स्थान पाएगा, जबकि अकुलाहट बाद में आएगा। इसी प्रकार 'इ' तथा 'इं' में से इं से प्रारम्भ होने वाले भाब्द पहले आएँगे तथा इ से प्रारम्भ होने वाले भाब्द बाद में। जैसे –इंक व इकहरा में से इंक पहले आएगा तथा इकहरा बाद में आएगा।

# खण्ड ग

## काव्यांश पर आधारित अर्थ–ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

### पद

### कबीरदास

हम तौ एक एक करि जांनां।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां ।।
एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समांनां।
एकै खाक गढ़े सब भांड़ै एकै कोंहरा सांनां।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबांनां।
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांनां।।

प्रश्न 1. कबीर परमात्मा के किस स्वरूप में आस्था रखते हैं? और वह स्वरूप किस प्रकार का है?

उत्तरः– कबीर परमात्मा के अद्वैत स्वरूप में आस्था रखते थे और वह स्वरूप निर्गुण निराकार ईश्वर का है।

प्रश्न 2. कबीर ने किन लोगों को नरक का अधिकारी माना है?

उत्तरः– कबीर ने उन लोगों को नरक का अधिकारी माना है जो लोग परमात्मा को एक नहीं, दो मानते हैं।

प्रश्न 3. कबीर ने किस प्रकार सिद्ध किया है कि ईश्वर एक है?

उत्तरः– कबीर ने कहा कि जिस प्रकार विश्व में एक ही वायु और जल है उसी प्रकार संपूर्ण संसार में एक ही परम ज्योति व्याप्त है। सभी मानव एक ही मिटटी से ब्रम्हा द्वारा निर्मित हैं।

प्रश्न 4. कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तरः– कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए मिथ्या दंभ, माया–मोह अर्थात सुखों को त्यागना आवश्यक है।

## पद

## मीरा

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई
जा के सिर मोर–मुकुट, मेरो पति सोई
छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई?
संतन ढिग बैठि–बैठि, लोक–लाज खोयी
अंसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोयी
अब त बेलि  फैलि गयी, आणंद–फल होयी
दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम से विलोयी
दधि मथि घृत काढ़ि लियो, डारि दयी छोयी
भगत देखि राजी हुयी, जगत देखि रोयी
दासि मीरां लाल गिरधर! तारो अब मोही

प्रश्न 1. मीरा अपना सर्वस्व किसे मानती हैं? और वह स्वरूप कैसा है।

उत्तरः– मीरा श्रीकृश्ण को अपना सर्वस्व मानती हैं, जिनके सिर पर मोर–मुकुट सुशोभित है।

प्रश्न 2. मीरा ने समाज को क्या चुनौती दी है?

उत्तरः– मीरा ने समाज को चुनौती दी है कि उसने तो साधु–संन्यासियों के साथ बैठ–बैठकर सामाजिक और पारिवारिक मान–मर्यादा का परित्याग कर दिया है।

प्रश्न 3. मीरा किसे देखकर प्रसन्न हो उठती हैं तथा किसे देखकर रो पड़ती हैं?

उत्तरः– मीरा प्रभु–भक्त को देखकर प्रसन्न हो उठती हैं तथा संसार को देखकर रो पड़ती हैं।

प्रश्न 4. मीरा कृश्ण से क्या प्रार्थना करती हैं और क्यों?

उत्तरः– मीरा कृश्ण से अपना उद्धार करने की प्रार्थना करती हैं ताकि उन्हें मुक्ति मिल सके।

## पथिक

## कवि– रामनरेश त्रिपाठी

निकल रहा है जलनिधि–तल पर दिनकर–बिंब अधूरा।
कमला के कंचन–मंदिर का मानो कांत कँगूरा।
लाने को निज पुण्य–भूमि पर लक्ष्मी की असवारी।
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण–सड़क अति प्यारी।।
निर्भय, दृढ़, गंभीर भाव से गरज रहा सागर है।
लहरों पर लहरों का आना सुंदर, अति सुंदर है।
कहो यहाँ से बढ़कर सुख क्या पा सकता है प्राणी?
अनुभव करो हृदय से, हे अनुराग–भरी कल्याणी।।

प्रश्न 1. सागर के तट पर खड़ा कवि क्या देखता है?

उत्तरः– सागर के किनारे खड़ा कवि सूर्य का उदित होना देखता है।

प्रश्न 2. सूर्य के उदित रूप को देखकर कवि क्या कहता है?

उत्तरः– सूर्य के उदित रूप को देखकर कवि कहता है कि जब समुद्र के जल की सतह से सूर्य का अधूरा–सा प्रतिबिंब उभरता है तो ऐसा जान पड़ता है मानों लक्ष्मी के स्वर्ण मंदिर का कँगूरा हो।

प्रश्न 3. लक्ष्मी के स्वागत के लिए सागर ने क्या किया है?

उत्तरः– लक्ष्मी के स्वागत के लिए समुद्र ने सोने जैसी सड़क बिछा दी है।

प्रश्न 4. कवि प्रकृति के नूतन रूप को दिखाकर क्या प्रगट करना चाहता है?

उत्तरः– कवि प्रकृति के प्रतिक्षण बदलते नूतन रूप को दिखाकर बताना चाहता है कि प्रकृति के अद्‌भुत सौंदर्य से बढ़कर कोई दूसरा सुख नहीं है।

## वे आँखें

### सुमित्रानंदन पंत

लहराते वे खेत दृगों में
हुआ बेदखल वह अब जिनसे,
हँसती थी उसके जीवन की
हरियाली जिनके तृन–तृन से!
आँखों ही में घूमा करता
वह उसकी आँखों का तारा,
कारकुनों की लाठी से जो
गया जवानी ही में मारा!

प्रश्न 1. किसानों को किससे बेदखल कर दिया गया?

उत्तरः– किसानों को उनके अपने खेतों से जमींदारों ने बेदखल कर दिया।

प्रश्न 2. किसान किसे देखकर फूला न समाता था?

उत्तरः– किसान अपनी हरी–भरी लहलहाती खेती को देखकर फूला न समाता था।

प्रश्न 3. जमींदार के कारिंदों ने भरी जवानी में किसे पीट–पीटकर मार डाला था?

उत्तरः– जमींदार के कारिंदों ने भरी जवानी में किसान के बेटे को पीट–पीटकर मार डाला था।

प्रश्न 4. कविता में किसान किसके भाोशण की मार झेल रहे हैं?

उत्तरः– कविता में किसान जमींदारों के भाोशण की मार झेल रहे हैं।

## घर की याद

## भवानी प्रसाद मिश्र

हे सजीले हरे सावन,
हे कि मेरे पुण्य पावन,
तुम बरस लो वे न बरसें,
पाँचवें को वे न तरसें,
मैं मजे में हूँ सही है,
घर नहीं हूँ बस यही है,
किन्तु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

प्रश्न 1. कवि किसे और क्यों अपना संदेशवाहक बना रहा है?

उत्तरः– कवि सावन को अपना संदेशवाहक बना रहा है क्योंकि वह अपने घर और परिवार जनों से दूर जेल में है ताकि वह उन्हें संदेश और सांत्वना दे सके।

प्रश्न 2. कवि सावन को संदेशवाहक बनाकर किसके पास क्या संदेश देने के लिए भेज रहा है?

उत्तरः– कवि सावन को संदेशवाहक बनाकर अपना संदेश पिताजी के पास भेज रहा है कि वह जेल में आनंद पूर्वक है। उसे यहाँ कोई दुख नहीं है।

प्रश्न 3. जेल में कवि को वास्तव में क्या दुख है?

उत्तरः–जेल में कवि को वास्तव में यही दुख है कि वह अपने परिवार जनों से दूर जेल में है ; उसे घर और परिवार जनों का अभाव ही सबसे बड़ा अभाव है।

प्रश्न 4. कवि ने  सावन को किस प्रकार संबोधित किया है?

उत्तरः– कवि ने सावन के महीने को पुण्यात्मा और दूसरे का उपकार करने वाले के रूप में संबोधित किया है।

## चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती

## त्रिलोचन

चंपा ने यह कहा कि
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
तुम तो कहते थे गांधी बाबा अच्छे हैं
वे पढ़ने लिखने की कैसे बात कहेंगे
मैं तो नहीं पढ़ूँगी
मैंने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
कुछ दिन बालम संग साथ रह चला जाएगा जब कलकत्ता
बड़ी दूर है वह कलकत्ता
कैसे उसे सँदेशा दोगी
कैसे उसके पत्र पढ़ोगी
चंपा पढ़ लेना अच्छा है !

प्रश्न 1. कवि चंपा को क्या समझाता है?

उत्तरः– कवि चंपा को समझाता है कि उसे पढ़ाई लिखाई की आवश्यकता तब पड़ेगी जब वह विवाहोपरांत पति को संदेश भेजना चाहेगी।

प्रश्न 2. चंपा कवि से गांधी जी के बारे में क्या कहती है और क्यों ?

उत्तरः– चंपा कवि से कहती है कि गांधी जी अच्छे हैं फिर वे पढ़ने–लिखने की बात क्यों करते हैं, क्योंकि पढ़–लिख लेने से लोगों को जीविकोपार्जन के लिए अपना घर छोड़ना पड़ता है।

प्रश्न 3. चंपा के मन में कौन–सा भाव छिपा हुआ है?

उत्तरः– चंपा के मन में यह भाव छिपा है कि पढ़–लिखकर लोग धन कमाने के लिए दूर चले जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप घर टूट जाते हैं।

प्रश्न 4. कवि ने काव्यांश में चंपा को किस हकीकत से परिचित कराया है?

उत्तरः– कवि ने चंपा को बताया कि पढ़–लिखकर लोग धन कमाने के लिए घर से दूर चले जाते हैं जिसके कारण परिवार टूटते हैं।

## साये में धूप(गज़ल)

## दुश्यंत कुमार

कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए,
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।
यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चलें और उम्र भर के लिए।

प्रश्न 1. आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद क्या तय हुआ था?

उत्तरः– आज़ादी प्राप्त कर लेने के बाद यह तय हुआ था कि प्रत्येक घर को रोशनी देने के लिए सुख–सुविधा रूपी चिराग निश्चित रूप से प्रदान किए जाएँगे।

प्रश्न 2. कवि आज की कौन–सी स्थिति बताना चाहता है?

उत्तरः– कवि कहना चाहता है कि आज तो स्थिति यह बन गई है कि घर तो क्या, पूरे भाहर को रोशनी देने के लिए एक भी दीपक नहीं है।

प्रश्न 3. कवि के अनुसार वृक्षों को किस लिए लगाया जाता है?

उत्तरः– कवि के अनुसार वृक्षों को इसलिए लगाया जाता है ताकि हमें धूप न लग सके, किन्तु दुर्भाग्यवश आज़ादी प्राप्ति के पश्चात भी सुख–सुकून प्राप्त नहीं हो पा रहा है।

प्रश्न 4. कवि ने किस पर कटाक्ष किया है और क्यों?

उत्तरः– कवि ने भाासन व्यवस्था से जुड़े हुए लोगों पर कटाक्ष किया है, क्योंकि देशवासियों की सुख–सुविधा  का दायित्व भाासक वर्ग का होता है।

## वचन

## अक्क महादेवी

हे भूख! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद ! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल–पुथल
हे मोह ! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद! मत कर मदहोश
ईर्ष्या, जला मत
ओ चराचर! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्न मल्लिकार्जुन का

प्रश्न 1. अक्क महादेवी ने कौन सा संदेश दिया है?

उत्तरः– अक्क महादेवी ने इंद्रियों पर नियंत्रण रखने का संदेश दिया है।

प्रश्न 2. लक्ष्य प्राप्ति में इंद्रियाँ किस प्रकार बाधक होती हैं?

उत्तरः– इंद्रियाँ सांसारिक विशय विकारों से किसी ने किसी रूप में जुड़ी हुई होती है, जिसके कारण ईश्वर भक्ति में बाधा उत्पन्न होती है।

प्रश्न 3. ''ओ चराचर! मत चूक अवसर'' पंक्ति में निहित कवि के भाव को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– भारतीय दर्शन के अनुसार मानव–जन्म बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है। भक्ति द्वारा जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए इस अवसर का लाभ उठाने के लिए कहतीं हैं।

प्रश्न 4. ईर्श्या से ग्रस्त मानव क्या–क्या करता है?

उत्तरः– ईर्श्या से ग्रस्त मानव दूसरों की प्रगति देखकर जलता है, बल्कि वह तो स्वयं अपने आप को भी जलाता है।

## सबसे खतरनाक

## पाश

सबसे खतरनाक वह चाँद होता है
जो हर हत्याकांड के बाद
वीरान हुए आँगनों में चढ़ता है
पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता है
सबसे खतरनाक वह गीत होता है
आपके कानों तक पहुँचने के लिए
जो मरसिए पढ़ता है
आतंकित लोगों के दरवाजों पर
जो गुंडे की तरह अकड़ता है

प्रश्न 1. कवि ने किस जीवन को सबसे खतरनाक माना है?

उत्तरः– कवि ने समाज में फैले अन्याय और आतंक का विरोध न करने वाले जीवन को सबसे खतरनाक माना है।

प्रश्न 2. घर आंगन किन हत्याकांडों के कारण सुनसान हो जाते हैं?

उत्तरः– चारों ओर फैले आतंक के वातावरण में जब हत्याकांड की घटनाएँ होती हैं तब घर आंगन सुनसान हो जाते हैं।

प्रश्न 3. ''पर आपकी आँखों को मिर्चों की तरह नहीं गड़ता'' पंक्ति का आशय स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– वर्तमान समय में जब आतंकी गतिविधियों के कारण लाखों लोग हत्याकांडों की बलि चढ़ जाते हैं तो अन्य लोग उनके गम में सामिल होने की बजाय अपनी खुशियों में मग्न रहते हैं।

प्रश्न 4. कवि की दृश्टि में सबसे खतरनाक स्थितियाँ कौन सी हैं?

उत्तरः– कवि की दृश्टि में लोगों का सपनों को मार देना, लय से भटक जाना तथा सब कुछ चुपचाप सहन करना ही खतरनाक स्थितियाँ हैं।

## आओ, मिलकर बचाएँ

### निर्मला पुतुल

और इस अविश्वास–भरे दौर में
थोड़ा–सा विश्वास
थोड़ी–सी उम्मीद
थोड़े–से सपने
आओ, मिलकर बचाएँ
कि इस दौर में भी बचाने को
बहुत कुछ बचा है,
अब भी हमारे पास !

प्रश्न 1. कवयित्री किसे और कैसे बचाने की बात कहती है?

उत्तरः– कवयित्री सामाजिक–सांस्कृतिक और प्राकृतिक परिवेश को व्यक्ति के प्रयासों के द्वारा बचाना चाहती हैं।

प्रश्न 2. कवयित्री थोड़ी सी आशा देकर किसे जीवित करने की बात कर रही हैं?

उत्तरः– कवयित्री धूमिल पड़ती आदिवासी समाज की आशा की किरण को फिर से थोड़ी सी आशा देकर जीवित करने की बात कर रही हैं।

प्रश्न 3. प्रकृति के विनाश के कारण कौन विस्थापन के कगार पर पहुँच चुका है?

उत्तरः– प्रकृति के विनाश के कारण आदिवासी जातियाँ विस्थापन के कगार तक पहुँच चुकी हैं।

प्रश्न 4. आज के युग के बारे में कवयित्री कौन से विचार रखती हैं?

उत्तरः– कवयित्री का मानना है कि आज का युग ऐसा बन गया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दूसरे पर अविश्वास करने लगा है। हर कोई संदेह के घेरे में दिखने लगा है।

# काव्यांश पर आधारित सौंदर्यबोध संबंधी प्रश्नोत्तर

जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।

सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।

**उत्तरः– भाव–सौंदर्य–**

जिस प्रकार बढ़ई लकड़ी को काटता है परन्तु उसमें निहित अग्नि जो निराकार है, को नहीं काट सकता; ठीक उसी प्रकार भारीर नश्वर है, परन्तु आत्मा अमर है।

**शिल्प–सौंदर्य–**

- 'उदाहरण अलंकार' द्वारा ईश्वर को निराकार और घट–घट वासी बताया गया है। (उदाहरण के द्वारा बात को स्पश्ट किया गया है )
- काश्ट, अग्नि, अन्तरि आदि तत्सम भाब्द हैं।
- भाशा सधुक्कड़ी है।
- पद तुकांत है।

अंसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोयी

अब त बेलि  फैलि गयी, आणंद–फल होयी

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

इन पंक्तियों में मीरा का श्रीकृश्ण के प्रति अनन्य प्रेम, दृढ़ता, सात्विकता और तरलता की अभिव्यक्ति हुई है। मीरा ने आँसुओं के जल से सींच–सींच कर प्रेमरूपी बेल को पल्लवित किया है। अब वह बेल चारों तरफ फैल गई है और आनंदरूपी फल के कारण उन्हें आनंद प्राप्त होने लगाा है।

शिल्प–सौंदर्य–

- अँसुवन जल, प्रेमबेलि और आनंद–फल में रूपक अलंकार है।
- सींचि–सींचि में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।
- भाशा राजस्थानी है।
- पद तुकांत है

- मुक्तक भौली का प्रयोग है।

अंधकार की गुहा सरीखी
उन आँखों से डरता है मन,
भरा दूर तक उनमें दारुण
दैन्य दुख का नीरव रोदन!

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कवि ने किसान की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। जिसकी आँखों में दूर–दूर तक अंधकार रूपी निराशा भरी हुई है। जिसके कारण उसकी आँखें रोती हुई भी चुप हैं।

शिल्प–सौंदर्य–

- अंधकार की गुहा सरीखी में उपमा अलंकार है।
- दारूण दैन्य दुख में अनुप्रास अलंकार है।
- भाशा सरल सुबोध भाब्दों से युक्त खड़ी बोली है।
- स्वच्छंद कविता में लय और तुक नहीं है।

जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो गैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कवि हमें अपने स्वाभिमान के साथ घर में और घर के बाहर दोनों स्थानों पर जीने की प्रेरणा प्रदान करता है।

शिल्प–सौंदर्य–

- गुलमोहर भाब्द में यमक अलंकार है।
- उर्दू मिश्रित खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है।
- गुलमोहर स्वाभिमान का प्रतीक है।
- भोर के अंतिम पद में तुक का प्रयोग हुआ है।

सबसे खतरनाक वह आँख होती है
जो सब कुछ देखती हुई भी जमी बर्फ होती है
जिसकी नजर दुनिया को मुहब्बत से चूमना भूल जाती है
जो चीजों से उठती अंधेपन की भाप पर ढुलक जाती है
जो रोजमर्रा के क्रम को पीती हुई
एक लक्ष्यहीन दुहराव के उलटफेर में खो जाती है

उत्तरः– भाव–सौंदर्य–

कविता में कवि ने उस स्थिति को खतरनाक कहा है जब आँखों द्वारा सब कुछ देखने के बावजूद कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता है।

शिल्प–सौंदर्य–

- काव्यांश में लाक्षणिकता है।
- कविता में नए सौंदर्य विधान द्वारा तीखे तेवर दृश्टिगत होते हैं।
- कवि जड़ स्थितियों में बदलाव चाहता है।
- जमी बर्फ, अंधेपन की भाप, रोजमर्रा के क्रम को पीना आदि लाक्षणिक प्रयोग हैं।
- छन्द मुक्त कविता में लय और तुक का अभाव है।

## कविता की विशय–वस्तु पर आधारित लघुत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कबीर के अनुसार मानव भारीर का निर्माण किन पाँच तत्वों से हुआ है?

उत्तरः– मानव भारीर का निर्माण अग्नि, आकाश, जल, वायु और पृथ्वी नामक पाँच तत्वों से हुआ है। मृत्यु के पश्चात् मानव भारीर मिट्टी में विलीन हो जाता है।

प्रश्न 2. 'सहजै सहज समाना' पंक्ति में निहित कबीर के उद्देश्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– कबीर के अनुसार ईश्वर सहज रूप में कण–कण में व्याप्त है, जिसको बिना किसी बाह्याडंबरों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

प्रश्न 3. कबीर ने किन–किन पाखंडों का उल्लेख किया है?

उत्तरः– कबीर ने मूर्ति पूजने, माला पहनने, छापा–तिलक धारण करने, कब्र–पूजने, साखी सबद गाने, धार्मिक ग्रंथों का पाठ करने, तीर्थ यात्रा करने आदि पाखंडों का उल्लेख किया है।

प्रश्न 4. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तरः– लोग मीरा को बावरी इसलिए कहते हैं क्योंकि वे श्रीकृश्ण के प्रेम में इतनी अनुरक्त हो गई थीं कि श्रीकृश्ण को ही अपना पति मान लिया था। वे साधु–संतों के बीच में बैठकर नाचती थीं और प्रचलित सामाजिक परंपराओं एवं मर्यादाओं का उल्लंघन करती थीं।

प्रश्न 5. मीरा जगत को देखकर रोती क्यों हैं?

उत्तरः– मीरा जगत को देखकर रोती हैं क्योंकि लोग मोह–माया के चक्कर में फँसकर व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त हैं। सांसारिक कार्यों में व्यस्त होने के कारण उनका उद्धार संभव नहीं है। यही देखकर मीरा ने दुख प्रगट किया है।

प्रश्न 6. आत्म–प्रलय का क्या अर्थ है? पथिक पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तरः– आत्म–प्रलय का अर्थ है–स्वयं को भूल जाना। सागर तट पर खड़ा पथिक प्रकृति में प्रतिक्षण होने वाले परिवर्तनों के कारण भाव–विह्वल हो जाता है। जिसके कारण उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है।

प्रश्न 7. पथिक किस पर बैठकर आकाश में विचरण करना चाहता है और क्यों?

उत्तरः– पथिक बादलों पर बैठकर समुद्र और आकाश के बीच में विचरण करना चाहता है क्योंकि वह नीले आकाश और नीले समुद्र के प्राकृतिक सौंदर्य को देखना चाहता है। उसे समुद्र और आकाश का प्राकृतिक सौंदर्य अपनी ओर आकर्शित करता है।

प्रश्न 8. 'वे आँखें' कविता में कवि के प्रतिपाद्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– इस कविता में कवि ने युग–युग से भाोशित किसान की स्वाधीनता के बाद के जीवन की दुर्दशा का मार्मिक चित्रण किया है। विकास की तमाम घोशणाओं के बावजूद उसके व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन में कोई परिवर्तन देखने को नहीं मिलता। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय  किसान भुखमरी के कारण आत्महत्या करने के लिए विवश दिखाई पड़ रहा है।

प्रश्न 9. ''यह तुम्हारी लीक ही है'' से कवि का क्या आशय है?

उत्तरः– इसके द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि इस परिवार की परंपरा देश के प्रति कर्तव्य निभाने की है। भवानी ने देश के लिए जेल जाकर इसी पुरानी परंपरा का निर्वाह किया है।

प्रश्न 10. ''चंपा काले–काले अच्छर नहीं चीन्हती'' में कवि ने क्या संदेश दिया है?

उत्तरः– काले–काले विशेशण काव्यांश में अक्षरों के लिए प्रयोग में आया है। जो एक तरफ शिक्षा–व्यस्था के अन्तर्विरोधों को उजागर करता है तो दूसरी ओर उस दारुण यथार्थ से हमारा परिचय कराता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में नारी–शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। जिसके कारण ग्रामीण स्त्रियाँ प्रायः अनपढ़ होती हैं।

प्रश्न 11. चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे?

उत्तरः– चंपा यद्यपि पढ़ी लिखी नहीं है फिर भी उसके मन में भविश्य के प्रति आशंका उत्पन्न हो जाती है। आर्थिक तंगी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर काम धंधे की तलाश में बड़ी मात्रा में लोगों का पलायन होता है और वहाँ वे भाोशक व्यवस्था के शिकार बनते हैं। कवि द्वारा यह कहना कि उसका पति थोड़े समय तक साथ रहेगा और फिर कलकत्ता चला जाएगा। इसके कारण वह घर टूटने की आशंका से भयभीत हो जाती हैं और कलकत्ता पर वज्र गिरने की कामना करती है ताकि न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी।

प्रश्न 12. ''दरख्तों के साये में धूप लगती है'' से कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तरः– इसके द्वारा कवि यह कहना चाहता है कि जिन उच्च पदस्थ व्यक्तियों और संस्थाओं से जनता को समस्याओं के समाधान होने की आशा थी वही अन्याय और अत्याचार का पर्याय बन गए हैं।

प्रश्न 13. कवयित्री ईश्वर को जूही के फूल के समान क्यों कह रही हैं?

उत्तरः– जूही के फूल बहुत छोटे, सुकुमार और मधुर सुगंध वाले होते हैं। इसी प्रकार ईश्वर भी अत्यंत सूक्ष्म, कोमल और मधुर गुण वाले होते हैं। जूही के फूल की तरह ईश्वर की सुगंध भी चहुँ ओर फैली है।

प्रश्न 14. मुट्ठियाँ भींचकर बस वक्त लिकालना, बुरा क्यों है?

उत्तरः– मुट्ठियाँ भींचकर रह जाना का अर्थ होता है– क्रोधवश कसमसाकर रह जाना। व्यक्ति को अन्याय, अत्याचार को देखकर क्रोध आता है। वह उसके विरुद्ध संघर्श करना चाहता है

किन्तु भय विवशता अथवा अकेला होने की वजह से कुछ नहीं कर पाता है। वह केवल कसमसाकर रह जाता है। समाज और व्यक्ति के लिए यह स्थिति बुरी है।

प्रश्न 15. भाशा में 'झारखंडीपन' से क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– संथाली आदिवासियों की मातृभाशा संथाली है। वे दैनिक व्यवहार में जिस संथाली भाशा का प्रयोग करते हैं, उसमें उनके राज्य झारखंड की पहचान झलकती है। उनकी भाशा से यह पता लग जाता है कि वे झारखंड राज्य के निवासी हैं।

## गद्यांश पर आधारित अर्थ–ग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

## नमक का दारोगा

## मुंशी प्रेमचंद

1. धर्म की इस बुद्धिहीन दृढ़ता और देव–दुर्लभ त्याग पर मन बहुत झुंझलाया। अब दोनों भाक्तियों में संग्राम होने लगा। धन ने उछल–उछलकर आक्रमण करने भ्ाुरू किए। एक से पाँच, पाँच से दस, दस से पंद्रह, और पन्द्रह से बीस हजार तक नौबत पहुँची, किन्तु धर्म अलौकिक वीरता के साथ इस बहुसंख्यक सेना के सम्मुख अकेला पर्वत की भाँति अटल, अविचल खड़ा था।

प्रश्न 1. धर्म को बुद्धिहीन तथा देव–दुर्लभ त्याग क्यों कहा गया है?

उत्तरः– धर्म धन की असीम भाक्ति को नहीं जानता है। मुंशी वंशीधर, अलोपीदीन के धन की भाक्ति का अंदाज नहीं लगा पाए थे। उन्हें पता नहीं था कि धन के सन्मुख सभी नतमस्तक हो जाते हैं। यहाँ तक कि देवता भी इसका त्याग सरलता से नहीं कर पाते। इसलिए धर्म (वंशीधर) को बुद्धिहीन तथा देव–दुर्लभ त्याग कहा गया है।

प्रश्न 2. धर्म किस प्रकार धन की सेना के सामने डटा रहा?

उत्तरः– धर्म (वंशीधर) अलौकिक वीरता के साथ धन (अलोपीदीन) की बड़ी सेना के सामने अकेला पर्वत के समान अटल अविचल डटा रहा अर्थात् वंशीधर पर पंडित अलोपीदीन द्वारा दिए गए प्रलोभनों का कोई असर नहीं हो रहा था।

प्रश्न 3. ''दोनों भाक्तियों में संग्राम होने लगा'' से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– धर्म और धन को लेखक ने दो भाक्तियों के रूप में पहचान की है। वंशीधर धर्मशक्ति के प्रतीक हैं तो अलोपीदीन धन की भाक्ति के। दोनों एक दूसरे पर विजय प्राप्त करने के लिए संघर्श करते हैं।

धन अर्थात् अलोपीदीन ने धर्म अर्थात् वंशीधर पर रिश्वत की राशि बढ़ा–बढ़ाकर तेजी से आक्रमण करने लगे। किन्तु वंशीधर पर इसका कोई असर नहीं पड़ा।

2. बिछड़न–समय बड़ा करुणोत्पादक होता है। आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है। माइ लॉर्ड! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे। वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें। पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत ही दुखित हुए। वे दिन–रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान् यहाँ से पधारें। पर अहो! आज आपके जाने पर हर्ष की जगह विषाद होता है। इसी से जाना कि बिछड़न–समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा पवित्र, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है। वैर–भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव उस समय होता है।

प्रश्न 1. बिछड़न–समय से क्या आशय है? वह करुणोत्पादक क्यों होता है?

उत्तरः– बिछड़न–समय का आशय है–अलग होने का अवसर, विदाई का समय। एक–दूसरे से अलग होने का समय करुणा उत्पन्न करने वाला होता है क्योंकि विदाई में एक दूसरे से अलग होने की व्यथा होती है।

प्रश्न 2. बैर–भाव छूटकर भाांत रस का आविर्भाव कब और क्यों होता है?

उत्तरः– विदाई के समय भात्रुता का भाव समाप्त हो जाता है। पहले के समस्त गिले–शिकवे दूर हो जाते हैं क्योंकि व्यक्ति सोचता है कि यह तो अब यहाँ से जा रहा है, इससे वैर–भाव रखने से कोई लाभ नहीं है। वह पिछले कटु–अनुभवों को भुला देता है।

प्रश्न 3. भारतवासी किसके दूसरी बार भारत आने से अप्रसन्न थे? वे दिन–रात क्या दुआ मनाते थे और क्यों?

उत्तरः– भारतवासी लार्ड कर्जन के दुबारा वायसराय बनकर भारत आने से अप्रसन्न और दुखित थे। वे भगवान से दिन–रात यही दुआ मनाते थे कि लार्ड कर्जन भारत पुनः न आएँ क्योंकि उनके पहले कार्यकाल में भारतीयों ने उनकी क्रूर नीतियों के कारण बहुत दुख भोगे थे।

3. किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी। धनराम हाथ–पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूँकने या सान लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे–धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा। फर्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी पसंद का बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहाँ गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और जरा–सी गलती होने पर छड़, बेंत, हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपना प्रसाद दे देते। एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे तो धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत सँभाल ली और पास–पड़ोस के गाँव वालों को याद नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे थे।

प्रश्न 1. ''किताबों की विद्या का ताप'' का आशय स्पश्ट करते हुए बताइए कि इसकी सामर्थ्य धनराम के पिता में क्यों नहीं थी?

उत्तरः– किताबों की विद्या का ताप से आशय है–पुस्तकें पढ़ाकर ज्ञानी अथवा भाक्ति से तेजस्वी बनाना। धनराम के पिता निर्धन थे इसलिए उनमें धनराम को आगे पढ़ाने की सामर्थ्य नहीं थी।

प्रश्न 2. गंगाराम के निधन के बाद गांव वालों को क्या याद नहीं रहा? और क्यों?

उत्तरः– शिल्पकार गंगाराम के निधन के बाद उसके पुत्र धनराम ने अपने पिता का पारंपरिक व्यवसाय अपना लिया था। इसलिए आसपास के गाँव वालों को गंगाराम का अभाव नहीं खला। उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे।

प्रश्न 3. धनराम किस प्रकार एक निपुण शिल्पकार बन गया था?

उत्तरः– जैसे ही धनराम बड़ा हुआ उसके पिता जी ने उसे धौंकनी फूँकने, सान लगाने के कार्यों में लगाना आरंभ कर दिया। धीरे–धीरे उसे हथौड़े द्वारा धन कमाने की विद्या सिखा दी। इस प्रकार वह पिता के काम सीखकर निपुण शिल्पकार बन गया था।

4. मैं उँचाई के माप के चक्कर में नहीं हूँ। न इनसे होड़ लगाने के पक्ष में हूँ। वह एक बार लोसर में जो कर लिया सो बस है। इन उँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है। हाँ, कभी–कभी उनका मान–मर्दन करना मर्द और औरत की शान है। मैं सोचता हूँ कि देश और दुनिया के मैदानों से और पहाड़ों से युवक–युवतियाँ आएँ और पहले तो स्वयं अपने अहंकार को गलाएँ फिर इन चोटियों के अहंकार को चूर करें। उस आनंद का अनुभव करें जो साहस और कूवत

से यौवन में ही प्राप्त होता है। अहंकार का ही मामला नहीं है। ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। युवक–युवतियाँ किलोल करें तो यह भी हर्षित हों। अभी तो इन पर स्पीति का आर्तनाद जमा हुआ है। वह इस युवा अट्टहास की गरमी से कुछ तो पिघले। यह एक युवा निमंत्रण है।

प्रश्न 1. स्पीति की पहाड़ियों की ऊँचाई के संबंध में लेखक के क्या विचार हैं?

उत्तरः– स्पीति की पहाड़ियों की ऊँचाई के संबंध में लेखक के विचार हैं कि उनकी ऊँचाई के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए क्योंकि इनकी ऊँचाई से होड़ लगाना मृत्यु है।

प्रश्न 2. लेखक किनका और क्यों आह्वान करता है?

उत्तरः– लेखक देश और दुनिया के युवक–युवतियों का आह्वान करता है कि वे स्पीति जैसे दुर्गम स्थान पर आएँ। पहले अपने अहंकार का त्याग करें और फिर इन चोटियों पर चढ़कर उनका मान–मर्दन करें।

प्रश्न 3. स्पीति की चोटियाँ क्यों उदास हो गई हैं? वे कैसे हर्शित हो सकती हैं?

उत्तरः– स्पीति की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं। अगर युवक–युवतियाँ आकर किल्लोल करें तो ये हर्शित हो सकती हैं।

5. चित्रकला व्यवसाय नहीं, अंतरात्मा की पुकार है। इसे अपना सर्वस्व देकर ही कुछ ठोस परिणाम मिल पाते हैं। केवल ज़हरा ज़ाफरी को कार्य करने की ऐसी लगन मिली। वह पूरे समर्पण से दमोह शहर के आसपास के ग्रामीणों के साथ काम करती हैं। कल मैंने उन्हें फोन किया–यह जानने के लिए कि वह दमोह में क्या कर रही हैं। उन्हें बड़ी खुशी हुई कि मुझे सूर्यप्रकाश उस ग्रामीण स्त्री का पति, जो अपने पति का नाम नहीं ले रही थी का किस्सा याद है। मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख।' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह संदेश देने की कामना है कि कुछ घटने के इंतजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो–खुद कुछ करो। ज़रा देखिए, अच्छे–खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, जबकि उनमें तमाम संभावनाएँ हैं। और यहाँ हम बेचैनी से भरे, काम किए जाते हैं। मैं बुखार से छटपटाता–सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त किए रहता हूँ। मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ, जिसमें खामी लगती है। यह बहुत गज़ब की बात नहीं है, लेकिन मुझमें काम करने का संकल्प है। भगवद् गीता कहती है, ''जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है।'

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार चित्रकला क्या है और उसमें ठोस परिणाम कैसे मिल पाता है?

उत्तरः– लेखक के अनुसार चित्रकला व्यवसाय नहीं है। वह तो चित्रकार के हृदय की पुकार है। चित्रकार अपने भावों–विचारों को हृदय की आंतरिक अनुभूतियों को चित्रों में उकेरता है। चित्रकला में अपना सब कुछ अर्पित करने के बाद ठोस सफलता प्राप्त होती है।

प्रश्न 2. लेखक युवा मित्रों को क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तरः– लेखक यह संदेश देना चाहता है कि उन्हें विशेश अवसर की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने की अपेक्षा स्वयं ही कुछ करना चाहिए क्योंकि खाली बैठे रहने से कभी भी काम नहीं चलता।

प्रश्न 3. जीवन–संबंध में भगवद् गीता का क्या संदेश है?

उत्तरः– जीवन के संबंध में भगवद् गीता का संदेश है कि जीवन में जो कुछ भी है वह तनाव के कारण है। इसलिए हमें तनाव से दूर रहना चाहिए।

## गद्य पाठों की विशय–वस्तु पर आधारित बोधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. ''नमक का दारोगा'' कहानी का नायक कौन है? उसकी चारित्रिक विशेशताएँ लिखिए।

उत्तरः– ''नमक का दारोगा'' कहानी का नायक मुंशी वंशीधर है, जिनकी चारित्रिक विशेशताएँ निम्नलिखित हैं–

- मुंशी वंशीधर सद्वृत्ति, अच्छाई और सत्य का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्ति थे।
- वे सुशिक्षित, धर्मनिश्ठ और ईमानदार थे।
- उनमें स्वाभिमान कूट–कूट कर भरा था।
- उनमें विनम्रता देखने को मिलती है। आलोपीदीन की सहृदयता को वे कृतज्ञता से स्वीकार कर लेते हैं।

प्रश्न 2. सत्यजित राय ने किसे अपनी खुशकिस्मती बताया है?

उत्तरः– सत्यजित राय की फिल्म 'पथेर पांचाली' का निर्माण कार्य लगभग ढाई साल तक चला। उन्हें भय लगने लगा था कि कहीं अपू और दुर्गा की भूमिमा निभाने वाले बच्चे ज्यादा बड़े न हो जाएँ। यदि

वे ज्यादा बड़े हो गए तो वह फिल्म में जो दिखाना चाहते हैं, वह दिखाई न देगा। इसी प्रकार इंदिरा ठकुराइन की भूमिका निभाने वाली अस्सी वर्शीय चुन्नीबाला देवी भी ढाई साल तक जीवित रहीं और बच्चे भी अधिक बड़े नहीं हुए, लेखक ने इसे अपनी खुशकिस्मती बताया है।

प्रश्न 3. लार्ड कर्जन के जाने पर विशाद की जगह हर्श क्यों था?

उत्तरः– लार्ड कर्जन के वापस इंग्लैंड जाने पर भारतीय जनता में विशाद की जगह हर्श की भावना थी क्योंकि लार्ड कर्जन के भाासन काल में भारतीय जनता और अधिक बेबस दुखी और लाचार हो गई थी। उसके आततायी रूप से हर भारतीय पीड़ित था। उसने आठ करोड़ भारतीय जनता की प्रार्थना ठुकराकर बंग–भंगकर देश में अशांति फैला दी थी। जिसको आने वाले कई सदियों तक भारतीय जन मानस भुला नहीं सका।

प्रश्न 4. मोहन गाँव की इन मान्यताओं से अपरिचित हो ऐसा संभव नहीं था–इस कथन में किन मान्यताओं की ओर संकेत किया गया है?

उत्तरः– इस कथन में गाँव की निम्नलिखित मान्यताओं की ओर संकेत किया गया है –

- ब्राम्हण टोले का शिल्पकार टोले में उठना बैठना नहीं होता था।
- काम–काज के लिए जाने पर भी खड़े–खड़े ही बातचीत निपटा ली जाती थी।
- ब्राम्हण टोले के लोगों को बैठने के लिए कहना उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था।
- निर्धनता के कारण गरीब लोगों को अपने पैतृक व्यवसाय को चुनने की विवशता थी।

प्रश्न 5. ''शिव का अट्टहास नहीं, हिम का आर्तनाद है''– से लेखक का क्या अभिप्राय है?

उत्तरः– इस कथन से लेखक का आशय है कि स्पीति की पहाड़ियाँ बहुत ऊँची, नंगी, विरान और भव्य हैं। इन चोटियों पर स्पीति के नर–नारियों की दुख–दर्द भरी आवाज जमी हुई है।

इन ऊँची, नंगी और भव्य पहाड़ियों में लोगों के हित अथवा कल्याण का अट्टहास नहीं है अपितु हर ओर बर्फ का आर्तनाद है। चारों तरफ बर्फ के कारण ठिठुरन, जलन और पीड़ा है।

प्रश्न 6. संपादक रजनी का साथ किस प्रकार देता है?

उत्तरः– संपादक अमित के उदाहरण के आधार पर एक अच्छा सा लेख तैयार करके पी0टी0आई0 के द्वारा एक साथ सभी अखबारों के लिए प्रसारित करवा देता है। उसके साथ ही वह यह सूचना भी प्रकाशित करवाता है कि 25 तारीख को अभिभावकों की इस संबंध में एक मीटिंग होगी।

प्रश्न 7. जामुन का पेड़ कहानी के आधार पर कहानीकार के उद्देश्य को स्पश्ट कीजिए।

उत्तरः– जामुन का पेड़ लेखक की एक हास्य–व्यंग्य कहानी है जिसमें कार्यालयी कार्य–पद्धति की निरर्थकता के साथ–साथ व्यस्था के संवेदनशून्य और अमानवीय पक्ष को उजागर किया है। इसके अतिरिक्त एक दूसरे पर टालने की प्रवृत्ति और कार्यालयों के चक्कर में व्यर्थ समय बिताने की परंपरा को भी उजागर किया गया है।

प्रश्न 8. वर्तमान समय में किसानों की स्थिति किस सीमा तक बदली है?

उत्तरः– वर्तमान समय में किसानों की स्थिति में निरंतर परिवर्तन आ रहा है। अब उन्हें जमींदार, पूँजीपतियों के शिकंजे में नहीं फँसना। अब उन्हें बैंकों से आसान ब्याज पर कर्ज मिलता है। उन्हें उत्तम खाद बीज आधुनिक कृशियंत्र सिंचाई के साधन उपलब्ध हैं। परन्तु आज़ादी के पैंसठ वर्श बाद भी किसानों के हित को ध्यान में रखकर कोई ऐसी योजनाएँ नहीं बनाई गईं जिनसे किसान के जीवन में खुशहाली आ सके।

प्रश्न 9. लेखक की कला में कैसे निखार आया?

उत्तरः– लेखक को वेनिस अकादमी के प्रोफेसर लैंग हैमर ने काम के लिए अपना स्टूडियो दे दिया वहाँ सारे दिन चित्र बनाते और सायंकाल उन चित्रों को दिखाकर बारीकी से उनका विश्लेशण करते। लेखक के काम में उनकी रूचि बढ़ती गई जिसके परिणाम स्वरूप कला में भी निखार आता गया।

प्रश्न 10. वकील और भाहर की भीड़ समाज की किस सच्चाई को उजागर करते हैं?

उत्तरः– वकील न्यायिक व्यवस्था में व्याप्त भ्रश्टाचार के साथ–साथ सत्य को असत्य बनाने की सच्चाई को उजागर करते हैं। वकील इस सत्य को भी पुश्ट करते हैं कि धन के बल पर उन्हें

खरीदा जा सकता है। भाहर की भीड़ उन तमाशबीनों की तरह होती है जो भीड़ को देखकर साथ देते हैं और उन्हें जिस दिशा में हाँक दिया जाता है वह उसी ओर चल देती है।

# पूरक पुस्तक – वितान भाग –1

## पाठ–1 भारतीय गायिकाओं मे बेजोड़ – लता मंगेशकर

### महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: लेखक को लताजी की आवाज़ के जादू का परिचय कब व कैसे हुआ ?

उ.– वर्शों पूर्व, जब लेखक ने अपनी बीमारी के दौरान रेडियो खोला तो लताजी द्वारा गया हुआ गाना सुना व गाने के अंत में गायिका का नाम घोशित हुआ–लता मंगेशकर। यही उनका प्रथम परोक्ष परिचय था।

प्र.2: लताजी के गायन की किन विशेशताओं की ओर लेखक ने ध्यान आकर्शित किया है ?

उ.– लताजी के गायन की निम्नांकित विशेशताओं की ओर लेखक ने पाठकों का ध्यान आकर्शित किया है–

1. गानपन व सुरीलापन – वह मिठास जो श्रोता को मस्त कर देती है।
2. स्वरों की निर्मलता, कोमलता व मुग्धता
3. नादमय उच्चार – गीत के किन्हीं दो भाब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भर देना, जिससे वे दोनों भाब्द विलीन होते–होते एक दूसरे में मिल जाते हैं।
4. उच्चारण की भाुद्धता।
5. भावानुकूल आरोह अवरोह।

प्र.3: लता की गायकी का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

उ.– लता की गायकी ने लोगों में संगीत के प्रति रुझान विकसित किया है। आम आदमी भी अब संगीत की सूक्ष्मता को समझने लगा है। आज के बच्चों के गले पहले की तुलना में अधिक सधे हुए व अधिक सुरीले हैं। संगीत के विविध प्रकारों से उनका परिचय बढ़ा है।

## निबंधात्मक प्रश्न :

प्र.1: चित्रपट संगीत व भाास्त्रीय संगीत में अंतर स्पश्ट कीजिए।

उ.– चित्रपट संगीत में प्रयोगधर्मिता है। ये संगीतकार जहाँ भाास्त्रीय संगीत की रागदानी को अपनाते है, वहीं लोक संगीत की अपार विपुल सामग्री का भी बेझिझक उपयोग अपने चित्रपट संगीत में करते हैं। उसमें लचकता होती है। इसमें प्रायः आधे तालों का प्रयोग होता है। द्रुतलय व चपलता इसका प्रमुख गुणधर्म है।

भाास्त्रीय संगीत में गम्भीरता अपेक्षित होती है। उसमें ताल अपने परिश्कृत रूप में प्रयुक्त होता है। भाास्त्रीय संगीतकार आत्मसंतुश्ट वृत्ति के हैं, वे नए प्रयोगों में रुचि नहीं दिखाते, बल्कि कर्मकाण्ड को आवश्यकता से अधिक महत्त्व देते हैं।

भाास्त्रीय संगीत का आनन्द लेने के लिए श्रोता के पास कम से कम घण्टा–आधा घण्टा का समय होना चाहिए, जबकि चित्रपट संगीत दो तीन मिनट में ही श्रोता को भाव विभोर कर सकता है ।

## अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: संगीत के क्षेत्र में लताजी के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्र.3 कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर को बेजोड़ गायिका क्यों माना है ?

# पाठ–2 : राजस्थान की रजत बूँदें

## महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: राजस्थान में पानी के कौन–कौन से रूप माने जाते हैं ?

उ.– राजस्थान में पानी के तीन रूप माने जाते हैं–

1. पालर पानी – वर्शा का वह जल जो बहकर नदी तालाब आदि में एकत्रित हो जाता है।

2. पाताल पानी – जो वर्शा जल जमीन में नीचे धँसकर 'भूजल' बन जाता है। वह कुओं/ट्यूबबेल आदि द्वारा हमें प्राप्त होता है।
3. रेजाणी पानी – वह वर्शा जल जो रेत के नीचे जाता तो है, परन्तु खड़िया मिट्टी के परत के कारण भूजल से नहीं मिल पाता व नमी के रूप में रेत में समा जाता है, जो कुंई द्वारा प्राप्त किया जाता है ।

प्र.2: रेगिस्तान की भीशण गर्मी में भी रेत में समाया रेजाणी पानी भाप बनकर क्यों नहीं उड़ पाता ?

उ. – मिट्टी के कणों के विपरीत रेत के कण बारीक होते हैं। वे एक दूसरे से चिपकते नहीं अतः मिट्टी की तरह रेत में दरारें नहीं पड़तीं । इस कारण नमी भाप बनकर उड़ नहीं पाती व कुंइयों के माध्यम से भुद्ध मीठे जल के रूप में प्राप्त होती है।

प्र.3: कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है ?

उ. – कुंई का मुँह छोटा रखने के पीछे तीन प्रमुख कारण हैं –

1. दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो तीन घड़ा पानी ही एकत्रित हो पाता है। बड़ा व्यास होने पर पानी की गहराई कम हो जाएगी, जिससे उसे निकालना सम्भव नहीं होगा।
2. मुँह चौड़ा होने पर गर्मी से पानी वाश्प बनकर उड़ जाएगा।
3. पानी को साफ रखने व चोरी से बचाने के लिए कुंई को ढँकना जरूरी है, जो सँकरे मुँह होने पर ही संभव है।

प्र.4: कुंई की खुदाई में काम आने वाले औजार व चिनाई के काम में आने वाली सामग्री का विवरण दीजिए।

उ.– कुंई की खुदाई, व्यास कम होने के कारण फावड़े या कुदाल से नहीं की जाती ; उसके लिए 'बसौली' का प्रयोग किया जाता है। यह छोटे हत्थे वाला फावड़े के आकार जैसा औजार होता है।

कुंई की चिनाई के लिए 'खींप' नामक घास से बने, लगभग तीन अंगुल मोटे रस्से–का प्रयोग होता है। जहाँ खींप घास उपलब्ध नहीं होती, वहाँ चिनाई के लिए अरणी, बण(कैर), बावल या कुंबट के पेड़ों की लकड़ी से बने लट्ठों का प्रयोग किया जाता है।

प्र.5: एक कुंई की चिनाई में लगभग कितना रस्सा लग जाता है ?

उ. – पाँच हाथ व्यास वाली कुंई में रस्से की एक कुंडली/घेरा बनाने में ही लगभग पन्द्रह हाथ रस्सा लग जाता है। एक हाथ की गहराई तक की चिनाई में रस्से के आठ–दस लपेटे लग जाते हैं। यदि कुंई की गहराई तीस हाथ भी मान लें तो उसकी चिनाई में लगभग चार हजार हाथ लंबा रस्सा लगेगा।

## अन्य महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.6: चेजारों अपने सिर की रक्षा कैसे करते हैं ?

प्र.7: गहराई में चेजारो को भीशण गर्मी से राहत कैसे पहुँचाई जाती है ?

प्र.8: मरुभूमि में वर्शा की मात्रा का माप कैसे किया जाता है ?

प्र.9: राजस्थान के किन–किन क्षेत्रों में कुंइयों का निर्माण होता है ? अथवा खड़िया पत्थर की परत कहाँ–कहाँ पाई जाती है ?

प्र.10: गोधूलि बेला में कुंइयों से पानी निकालने का वर्णन लेखक ने किस प्रकार किया है ?

## निबंधात्मक प्रश्न :

प्र.1: कुंई निर्माण की प्रक्रिया का वर्णन विस्तार से कीजिए।

उ.– मरुभूमि में कुंई निर्माण का कार्य चेलवांजी यानी चेजारो करते है। वे खुदाई व विशेश तरह की चिनाई करने में दक्षतम है। कुंई बनाना एक विशिश्ट कला है। चार–पाँच हाथ के व्यास की कुंई को तीस से साठ–पैंसठ हाथ तक की गहराई तक खोदने वाले चेजारो अत्यन्त कुशलता व सावधानी पूर्वक यह कार्य सम्पन्न करते हैं। चिनाई में थोड़ी सी भी चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन थोड़ी–थोड़ी खुदाई होती है। डोल से मलवा निकाला जाता है और फिर अब तक खुद चुकी गहराई की चिनाई की जाती है। ताकि मिट्टी धँसे नहीं ।

बीस–पच्चीस हाथ की गहराई तक जाते–जाते गर्मी का काफी बढ़ जाती है और हवा भी कम होने लगती है। इससे चेजारो की कार्यक्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। तब ऊपर

से मुट्ठी भर रेत तेजी से नीचे फेंकी जाती है, ताकि ताजी हवा नीचे जा सके और गर्म हवा बाहर आ सके । चेजारो सिर पर कांसे,पीतल या किसी अन्य धातु का एक बर्तन टोप की तरह पहनते हैं ताकि ऊपर से रेत, कंकड़–पत्थर से उनका बचाव हो सके। किसी–किसी स्थान पर ईंट की चिनाई से मिट्टी नहीं रुकती तब कुंई को रस्से से बाँधा जाता है। ऐसे स्थानों पर कुंई खोदने के पूर्व ही खींप नामक घास का ढेर लगाया जाता है। खुदाई भुरू होते ही तीन अंगुल मोटा रस्सा बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया जाता है। एक दिन की खुदाई पूरी होने पर इसके तल पर दीवाल के साथ सटाकर रस्से का एक के ऊपर एक गोला बिछाया जाता है और रस्से का आखिरी छोर ऊपर रहता है। अगले दिन फिर कुछ हाथ मिट्टी खोदी जाती है और रस्से की पहले दिन जमाई गई कुंडली दूसरे दिन खोदी गई जगह में सरका दी जाती है। बीच–बीच में जरूरत होने पर ईंट से भी चुनाई की जाती है।

जिन स्थानों पर पत्थर और खींप नहीं मिलता वहाँ लकड़ी के लंबे लट्ठों से चिनाई की जाती है। ये लट्ठे,अरणी,बण,बावल या कुंबट के पेड़ों से बनाए जाते है। इनके उपलब्ध न होने पर आक तक से भी काम लिया जाता है। खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही खुदाई का काम रुक जाता है और नीचे बूँद–बूँद करके पानी की धार लग जाती है। यह समय कुंई की सफलता स्वरूप उत्सव का अवसर बन जाता है।

### अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: कुंई निर्माण पर किस प्रकार ग्राम–समाज का नियन्त्रण रहता है ? अथवा व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वजनिक क्षेत्र में कुंइयों पर ग्राम–समाज अपना नियन्त्रण क्यों रखती है ?

प्र.3: कुंई की चिनाई प्रक्रिया विस्तार से समझाइए।

## पाठ–3 : आलो आंधारि

### महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.1: परित्यक्ता स्त्रियों को समाज में किन कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है ?

उ.– परित्यक्ता स्त्रियों को बेघर होने पर किराए के मकानों में रहकर जीवनयापन करना पड़ता है। गंदी बस्तियों में स्थित उन मकानों में न तो भौचालय होता है और न ही आस–पास स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण। उसे समाज के तरह–तरह के प्रश्नों का सामना करना पड़ता है, ताने सुनने पड़ते है, लोगों की कामुख/गंदी निगाहों का झेलना पड़ता है। उसकी दिनचर्या पर लोगों की कड़ी निगाह रहती है। उसकी सहायता के लिए उसके सगे–संबंधी भी आगे नहीं आते।

प्र.2: बेबी को अपने पति का घर क्यों छोड़ना पड़ा ?

उ.– उसका विवाह 13 वर्श की उम्र में अपने से दोगुनी उम्र वाले आदमी के साथ कर दिया गया था। भाादी के बारह तेरह बर्श तक तो उसने पति के अत्याचार सहन किए, किंतु अत्याचार जब सीमा से अधिक हो गए तो उसने अपने तीन बच्चों के साथ पति का घर छोड़ दिया।

प्र.3: बेबी को तातुश के घर काम कैसे मिला ?

उ.– एक कोठी में ड्राइवर का काम करने वाले एक परिचित सुनील को जब यह पता चला कि बेबी को डेढ़ सप्ताह बाद भी कोई काम नहीं मिला है तब वह उसे तातुश के घर ले गया। उसी ने उसे वहाँ काम दिलाने में मदद की।

## अन्य महत्त्वपूर्ण लघूत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र.4: सजने–सँवरने के बारे में बेबी का नजरिया क्या था ?

प्र.5: बेबी को अपनी माँ की मृत्यु का समाचार कब व कैसे मिला ?

प्र.6: भार्मिला दी तथा बेबी के संबंधों के बारे में बताइए।

प्र.7: बेबी को खुले आसमान के नीचे एक रात क्यों बितानी पड़ी ?

प्र.8: बेबी की उसके बड़े लड़के से मुलाकात कैसे हुई ?

प्र.9: तातुश के घर में आने पर बेबी के जीवन में क्या परिवर्तन आया ?

## निबंधात्मक प्रश्न :

प्र.1: घरेलू नौकरों को किन–किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

उ.– घरेलू नौकरों को अनेकों समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे–

1. निम्न जीवन स्तर :– पेट पालने के लिए घरेलू नौकर के रूप में काम करने वालों का जीवन स्तर बहुत निम्न होता है। कारण उन्हें काम के अनुसार उचित मजदूरी नहीं मिलती। आय कम होने से, अधिक किराया देने में असमर्थ होने के कारण उन्हें छोटे–छोटे, सुविधाहीन किराये के मकानों में रहना पड़ता है।
2. प्रातः जल्दी उठकर, बिना कुछ खाए–पिए काम में जुट जाना पड़ता है। फलतः वे कुपोशणजन्य विविध बिमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। वे ढ़ग से पहन–ओढ़ भी नहीं पाते।
3. मालिक व उसके परिजनों के इशारों पर नाचना पड़ता है।
4. कार्य में देरी हो जाने या काम बिगड़ जाने पर डाँट सहनी पड़ती हैं। कभी–कभी तो गाली–गलौच व मारपीट भी सहनी पड़ती है।
5. कार्य के घंटे निर्धारित नहीं होते। सुबह से रात तक काम जुटे रहना पड़ता है। कभी कोई अवकाश भी नहीं मिलता।
6. आय कम होने के कारण उनके बच्चे भी पड़ लिख नहीं पाते है। फलतः वे भी घरेलू नौकर बनने पर मजबूर हो जाते है।
7. नौकरी में भी स्थायित्व नहीं होता। मालिक कब काम से हटा दे – यह भय सदा बना रहता है।
8. काम से हटा दिए जाने पर, नया काम मिलने तक बेरोजगार रहना पड़ता है।
9. घरेलू स्त्री नौकरों को तो कभी–कभी यौन–भाोशण का शिकार भी बनना पड़ता है। बात न मानने पर चोरी आदि के आरोप लगाकर पुलिस के हवाले भी कर दिया जाता है।

इस प्रकार घरेलू नौकरों का जीवन गरीबी, विवशता व लाचारी की जीती जागती मिशाल बनकर रह जाता है।

## अन्य निबंधात्मक प्रश्न

प्र.2: बेबी के जीवन–निर्माण में तातुश के योगदान को रेखांकित कीजिए।

प्र.3: बेबी के चरित्र की विशेशताएँ बताइए।

(उत्तर संकेत – अत्याचार के प्रति विद्रोह, साहसी व परिश्रमी, अध्ययन के प्रति रुचिवंत, स्नेहमयी माता )

## खण्ड–घ

## मौखिक अभिव्यक्ति

**( इस भाग को अध्यापक द्वारा कक्षाओं में पूरा करना है। )**

**इसमें अध्यापक द्वारा छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति का मूल्यांकन किया जाना है, इसके लिए पाठ्यक्रम में 10 अंक निर्धारित हैं।**

इसके अंतर्गत निम्नलिखित विशयों को समाविश्ट किया जा सकता हैं –

**वार्तालाप हेतु कतिपय विशय –**

'भ्रश्टाचार और राजनीति'

'पर्यावरण संरक्षण : युवाओं की भूमिका'

'महँगाई : जनजीवन की आवश्यकताएँ

**वाद–विवाद संबंधी विशय –**

'जनसंचार की नवीनतम तकनीकी प्रतिबंधित हो '

'मनुश्य भावनाओं का पुंज है'

'कर्म से भाग्य को बदला जा सकता हैं'

'भारतीय संस्कृति अनुकरणीय है'

**भाशण संबंधी विशय –**

'विश्व का बढ़ता तापक्रम'

'व्यक्तित्व विकास में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका'

'राश्ट्र निर्माण में शिक्षक की भूमिका'

**ध्यातव्य –1. इसके अतिरिक्त साक्षात्कार, किसी घटना या खेल का आँखों देखा हाल और अन्य ऐसे कार्यक्रम जो आज मीडिया के माध्यम से प्रसारित हो रहे है उन्हें भी समाहित किया जा सकता है ।**

**2. विशयाध्यापक उपर्युक्त विशयों के अतिरिक्त अन्य विशय विद्यार्थियों के स्तरानुसार निर्धारित कर सकते हैं।**

# आदर्श प्रश्न–पत्र

## हिन्दी (केन्द्रिक)

## कक्षा–11 वीं

**निर्धारित समय – 3 घण्टे** **अधिकतम अंक – 90**

**निर्देश : इस प्रश्न–पत्र में तीन खण्ड हैं– क ख और ग। सभी खण्डों के उत्तर लिखना अनिवार्य है।**

**कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना भाुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक**

**अवश्य लिखें।**

### खण्ड–क

**प्र.1:– निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए तथा इससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

सत्य के अनेक रूप होते हैं, इस सिद्धान्त को मैं बहुत पसंद करता हूँ। इसी सिद्धान्त ने मुझे एक मुसलमान को उसके अपने दृश्टिकोण से और ईसाई को उसके स्वयं

के दृश्टिकोण से समझना सिखाया है। जिन अंधों ने हाथी का अलग–अलग तरह से वर्णन किया वे सब अपनी दृश्टि से ठीक थे। एक–दूसरे की दृश्टि से सब गलत थे, और जो आदमी हाथी को जानता था उसकी दृश्टि से वे सही भी थे और गलत भी।

जब तक अलग–अलग धर्म मौजूद हैं तब तक प्रत्येक धर्म को किसी विशेश वाह्य चिन्ह की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन जब वाह्य चिंतन केवल आडम्बर बन जाते है अथवा अपने धर्म को दूसरे धर्मों से अलग बताने के काम आते है तब वे त्याज्य हो जाते हैं। धर्मों के भ्रातृ–मंडल का उद्देश्य यह होना चाहिए कि वह हिंदू को अधिक अच्छा हिंदू, एक मुसलमान को अधिक अच्छा मुसलमान और एक ईसाई को अधिक अच्छा ईसाई बनाने में मदद करे। दूसरों के लिए हमारी प्रार्थना वह नहीं होनी चाहिए – ईश्वर, तू उन्हें वहीं प्रकाश दे जो तूने मुझे दिया है, बल्कि यह होनी चाहिए – तू उन्हें वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित भीर्शक लिखिए। 2

(ख) किसी भी धर्म के अनुयायी को उसी के दृश्टिकोण से देखने की समझ किस सिद्धान्त के कारण पैदा हुई ? 2

(ग) अंधों और हाथी का उदाहरण क्यों दिया गया है ? 2

(घ) धर्म के वाह्य चिन्हों को कब और क्यों त्याग देना चाहिए। 2

(ड.) हमें ईश्वर से क्या प्रार्थना करनी चाहिए ? 2

**प्र.2:– निम्नलिखित काव्यांश पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

जो बीत गई सो बीत गई ।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया, तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले ;

पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर भाोक मनाता हैं।

(क) 'जीवन में एक सितारा था' कवि ने 'सितारा' भाब्द का प्रयोग किसके लिए किया है ? 1

(ख) कवि ने क्या संदेश दिया है ? इससे उसके किस दृश्टिकोण का परिचय मिलता है ? 1

(ग) अंबर को क्या–क्या सहन करना पड़ता है ? 1

(घ) अंबर टूटे तारों पर भाोक क्यों नहीं मनाता ? 1

(ड.) कवि ने अंबर का उदाहरण क्यों दिया है ? 1

अथवा

रोटी उसकी, जिसका अनाज, जिसकी जमीन, जिसका श्रम है ;
अब कौन उलट सकता स्वतंत्रता का सुसिद्ध, सीधा क्रम है।
आजादी है अधिकार परिश्रम का पुनीत फल पाने का,
आजादी है अधिकार भाोशणों की धज्जियाँ उड़ाने का।
गौरव की भाशा नई सीख, भिखमंगों की आवाज बदल,
सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल।
स्वाधीन मनुज की इच्छा के आगे पहाड़ हिल सकते है ;?
रोटी क्या ? ये अंबरवाले सारे सिंगार मिल सकते हैं।

(क) आजादी क्यों आवश्यक है ? 1

(ख) सच्चे अर्थो में रोटी पर किसका अधिकार है ? 1

(ग) कवि ने किन पंक्तियों में गिड़गिड़ाना छोड़कर स्वाभिमानी बनने को कहा है ? 1

(घ) कवि व्यक्ति को क्या परामर्श देता है ? 1

(ड.) आजाद व्यक्ति क्या कर सकता है ? 1

## खण्ड–ख

**प्र.3:– आकाशवाणी के निदेशक को रेडियो के कार्यक्रमों के बारे में सुझाव देते हुए एक**

**पत्र लिखिए।**

**5**

**अथवा**

**अपने मुहल्ले में दिन–प्रतिदिन बढ़ते बिजली संकट को लेकर विद्युत विभाग के मुख्य**

**अभियन्ता को पत्र लिखिए।**

**प्र.4:– निम्न में से किसी एक विशय पर 300 भाब्दों का एक निबंध लिखिए–**

**10**

(क) नर हो न निराश करो मन को

(ख) बढ़ते भाहर सिकुड़ते जंगल

(ग) राजनीति और भ्रश्टाचार

(घ) आजीविका और शिक्षानीति

**प्र.5:– निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए– 1×5=5**

(क) संचार माध्यम कितने प्रकार के होते हैं ?

(ख) जनसंचार किसे कहते हैं ?

(ग) पत्रकारिता के पहलू कौन–कौन से हैं ?

(घ) आजादी से पूर्व पत्रकारिता का लक्ष्य क्या था ?

(ड) पूर्णकालिक पत्रकार कौन होता है ?

**प्र.6:– बातें कम काम ज्यादा विशय पर एक फीचर लिखिए । 5**

**अथवा**

**रिश्वत का रोग विशय पर एक फीचर लिखिए।**

## खण्ड–ग

**प्र.7:– निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों का उत्तर लिखिए–**

हे भूख ! मत मचल
प्यास, तड़प मत
हे नींद ! मत सता
क्रोध, मचा मत उथल–पुथल
हे मोह ! पाश अपने ढील
लोभ, मत ललचा
हे मद ! मत कर मदहोश
ईर्श्या, जला मत
ओ चराचर ! मत चूक अवसर
आई हूँ संदेश लेकर चन्नमल्लिकार्जुन का।

(क) कवयित्री भूख–प्यास, क्रोध–मोह आदि से क्या प्रार्थना करती है और क्यों ? 2

(ख) कवयित्री किस अवसर से न चूकने की प्रेरणा देती हैं ? 2

(ग) कवयित्री किसके प्रति समर्पित है ? 2

(घ) काव्यांश में किस भौली का प्रयोग किया गया है। 2

**अथवा**

अपने चेहरे पर
संथाल परगना की माटी का रंग
भाशा में झारखंडीपन
ठंडी होती दिनचर्या में

जीवन की गर्माहट

मन का हरापन

भोलापन दिल का

अक्खड़पन, जुझारूपन भी

(क) कविता में किस प्रदेश का प्रभाव दृश्टिगोचर होता है ? 2

(ख) कवि किस प्रकार का जन–जीवन देखने को इच्छुक है ? 2

(ग) 'ठंडी होती दिनचर्या' और 'जीवन की गर्माहट' का भाव स्पश्ट कीजिए। 2

(घ) झारखंडीपन का अभिप्राय बताइए। 2

**प्र.8:– निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

संतो देखत जग बौराना।

साँच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना।।

नेमी देखा धरमी देखा, प्रात करै असनाना।

आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना।।

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़ै कितेब कुराना।

(क) काव्यांश की भाशा की दो विशेशताओं का उल्लेख कीजिए। 3

(ख) शिल्प–सौन्दर्य स्पश्ट कीजिए । 3

**अथवा**

मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई

जा के सिर मोर–मुकुट, मेरो पति सोई

छांड़ि दयी कुल की कानि, कहा करिहै कोई ?

संतन ढिंग बैठि–बैठि, लोक–लाज खोयी

अंसुवन जल सींचि–सींचि, प्रेम–बेलि बोयी

(क) काव्यांश की भाशा की दो विशेशताओं का उल्लेख कीजिए। 3

(ख) अलंकारों का उल्लेख करें। 3

**प्र.9:– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर लिखिए ।– 2×3=6**

(क) 'आओ, मिलकर बचाएँ' कविता में दिल के भोलेपन के साथ–साथ अक्खड़पन और जुझारूपन को भी बचाने की आवश्यकता पर क्यों बल दिया गया है ?

(ख) 'चंपा काले काले अच्छर नहीं चीन्हती' भीर्शक कविता में चंपा ने ऐसा क्यों कहा कि कलकत्ता पर बजर गिरे ?

(ग) पानी के रात भर गिरने और प्राण–मन के घिरने में परस्पर क्या संबंध है ? घर की याद कविता के आधार पर स्पश्ट करें।

(घ) किसान की पत्नी और उसकी बच्ची की मृत्यु के लिए आप किसे दोशी मानते है और क्यों ? 'वे आँखें कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

**प्र.10:– निम्नलिखित गद्यांश से संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–2+2+2=6**

नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना, यह तो पीर का मजार है। निगाह चढ़ावे और चादर पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो। मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते–घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत हे जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुश्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उसकी बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ ।

(क) यह किसकी उक्ति है ?

(ख) मासिक वेतन को पूर्णमासी का चाँद क्यों कहा गया है ?

(ग) क्या आप एक पिता के इस वक्तव्य से सहमत है ?

अथवा

फ़िल्म का काम आगे भी ढाई साल चलने वाला है , इस बात का अंदाजा मुझे पहले नहीं था। इसलिए जैसे–जैसे दिन बीतने लगे, वैसे–वैसे मुझे डर लगने लगा। अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे अगर ज्यादा बड़े हो गए, तो फ़िल्म में वह दिखाई देगा ! लेकिन मेरी खुशकिस्मती से उस उम्र में बच्चे जितने बढ़ते है,उतने अपू और दुर्गा की भूमिका निभाने वाले बच्चे नहीं बढ़े । इंदिरा ठाकरुन की भूमिका निभाने वाली अस्सी साल उम्र की चुन्नीवाला देवी ढाई साल तक काम कर सकी, यह भी मेरे सौभाग्य की बात थी।

(क) दिन बीतने के साथ लेखक के मन में क्या डर बैठ गया ?

(ख) लेखक किस बात में अपनी खुशकिस्मती मानता है ?

(ग) फ़िल्म बनाने में लेखक को क्या–क्या कठिनाईयाँ आईं ?

**प्र.11:– किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए । 3+3+3=9**

(क) 'भूलो' की जगह दूसरा कुत्ता क्यों लाया गया ? उसने फ़िल्म के किस दृश्य को पूरा किया ?

(ख) 'शिवशंभु' की दो गायों की कहानी के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ?

(ग) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी क्यों नहीं समझता था ?

(घ) स्पीति के लोग जीवनयापन के लिए किन कठिनाइयों का सामना करते हैं ?

**प्र.12:– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर दीजिए। 3+3+3=9**

(क) भाास्त्रीय संगीत तथा चित्रपट संगीत में अंतर स्पश्ट कीजिए।

(ख) पालरपानी से क्या समझते है ?

(ग) तातुश ने बेबी हालदार के बच्चों के बारे में क्या कहा ?

(घ) 'आलो–आँधारि' पाठ के आधार पर स्पश्ट कीजिए – लेखिका ने पार्क में जाना क्यों छोड़ दिया था ?

**प्र.13:– पालरपानी, पातालपानी तथा रेजाणीपानी के बारे में आप क्या जानते हैं ? 6**

**अथवा**

**आलो–आँधारि पाठ किस प्रकार जन सामान्य के लिए प्रेरणास्रोत साबित हो सकता है?**

**नोटः— 10 की मौखिक परीक्षा का आयोजन विशय अध्यापक स्वयं करेंगे।**

# उत्तर संकेत

## आदर्श प्रश्न–पत्र

## हिन्दी (केन्द्रिक)

## कक्षा–11 वीं

**निर्धारित समय – 3 घण्टे** **अधिकतम अंक – 90**

### खण्ड–क

**उ.1:—**

(क) सत्य और धर्म 2

(ख) सत्य के अनेक रूपों को समझने के सिद्धान्त के कारण पैदा हुई। 2

(ग) सत्य के अनेक रूपों को समझने के लिए 2

(घ) जब वे केवल धर्म के बाहरी आडम्बर बनकर रह जायें। 2

(ड.) हे ईश्वर ! तू दूसरों को वह सारा प्रकाश दे जिसकी उन्हें अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यकता है। 2

**उ.2:—**

(क) अपने आत्मीय व्यक्ति के लिए किया है। 1

(ख) अतीत की बातों पर अफसोस नहीं करना चाहिए।इससे कवि के सकारात्मक दृश्टिकोण का पता चलता है। 1

(ग) तारों को टूटने और बिछुड़ने का दुख सहन करना पड़ता है ? 1

(घ) अंबर यह जानता है कि जो बिछुड़ गए, टूट गए वे भाोक मनाने से पुनः नहीं मिलेंगे। 1

(ड.) अपनी प्रिय पात्र के बिछुड़ने पर भाोक में डूबे रहना व्यर्थ हैं। 1

अथवा

(क) परिश्रम का फल पाने, भाोशण का विरोध करने और गौरव की नई भाशा सीखने के लिए आजादी आवश्यक है। 1

(ख) जो अपनी भूमि पर कठोर परिश्रम करके अनाज पैदा करता है। 1

(ग) गौरव की भाशा नई सीख, भिखमंगों की आवाज बदल, 1
सिमटी बाँहों को खोल गरुड़, उड़ने का अब अंदाज बदल।

(घ) स्वतंत्रता के साथ जीवन जीने तथा परिश्रम के बल पर असंभव को संभव बनाकर सफलता पाने का परामर्श देता है। 1

(ड.) अपने परिश्रम का फल प्राप्त कर सकता है, भाोशण का विरोध कर सकता है, असंभव को संभव कर सकता है, पहाड़ को हिला सकता है तथा आकाश के तारे तोड़कर ला सकता है। 1

## खण्ड–ख

**उ..3:– प्रारम्भ – 1+1/4 अंक**

**विशयवस्तु – 2+1/2 अंक**

**समापन – 1+1/4 अंक**

**उ.4:– प्रस्तावना – 2 अंक**

**विशयवस्तु**

**प्रस्तुतीकरण** } **6 अंक**

**विस्तार**

**उपसंहार** **2 अंक**

**उ. 5:–** **1×5=5**

(क) संचार माध्यम दो प्रकार के होते है । –1. प्रिंट माध्यम, 2. इलेक्ट्रानिक माध्यम

(ख) किसी यांत्रिक माध्यम के जरिए समाज के विशाल वर्ग से संवाद स्थापित करने के प्रयास को जनसंचार कहते है।

(ग) पत्रकारिता के तीन पहलू है–

1. समाचारो को संकलित करना।
2. उन्हें संपादित कर छपने लायक बनाना।
3. पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाठकों तक पहुँचाना।

(घ) स्वाधीनता प्राप्ति ।

(ड) ऐसा पत्रकार जो किसी समाचार संगठन में काम करता है और नियमित वेतन पाता है, उसे पूर्णकालिक पत्रकार कहा जाता है

**उ..6:– प्रस्तावना –** **1 अंक**

**विशयवस्तु** **3 अंक**

**समापन** **1 अंक**

**उ.7:–**

(क) वे उसे सांसारिक कश्ट न दें, उसे हर प्रकार के विकारों से दूर रखें। 2

(ख) अपने आराध्य के चरणों में लीन होने के अवसर से न चूकने की प्रेरणा देती हैं। 2

(ग) अपने आराध्य चन्नमलिकार्जुन के चरणों में समर्पित है। 2

(घ) संबोधन भौली । 2

**अथवा**

(क) संथाल परगना और झारखंड का प्रभाव दृश्टिगोचर होता है। 2

(ख) कवि सहजता, सरलता, भोलापन और जुझारूपन देखने का इच्छुक है। 2

(ग) 'ठंडी होती दिनचर्या' का भाव है उदासीनता और आलस्य का वातावरण। 'जीवन की गर्माहट' का भाव है गतिशीलता और जुझारूपन। 2

(घ) झारखंडीपन का अभिप्राय है–झारखंड के लोगों के स्वाभाविक गुण। 2

**उ..8:–**

(क) 1. सधुक्कड़ी अथवा मिली जुली भाशा का प्रयोग। 3

2. तत्सम भाब्दों की प्रधानता।

(ख) अनुप्रास अलंकार,संबोधन भौली, प्रतीकात्मकता। 3

**अथवा**

(क) 1. ब्रज भाशा की प्रधानता।

2. राजस्थानी मिश्रित भाब्दों का प्रयोग। 3

(ख) पुनरुक्त प्रकाश अलंकार, रूपक अलंकार, अनुप्रास अलंकार 3

**उ.9:– निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन का उत्तर लिखिए ।– 2×3=6**

(क) भोले आदमी जरा–जरा सी बात पर अकड़कर तन जाते है और संघर्श के लिए तत्पर रहते है। ये तीनों गुण साथ–साथ चलते है। इसलिए कवयित्री ने तीनों को बचाने की आवश्यकता पर बल दिया है।

(ख) चंपा को लगता है कि कलकत्ता उसके परिवार को तोड़ने वाला है। कलकत्ता के कारण वह अपने पति से अलग हो जाएगी। इसलिए वह कहती है कि कलकत्ता पर बजर गिरे।

(ग) कवि को वर्शा अत्यन्त प्रिय थी इसलिए रातभर वर्शा होने के कारण उसे अपने घर की याद आ गई। उसे अतीत के खुशनुमा दिन याद आ गए। इसलिए उसके प्राणों में और मन में घर की यादें ही समा गई।

(घ) महाजन ने किसान से उसका सब कुछ छीन लिया । महाजन के कारण ही किसान के पास पत्नी की दवा दारू के लिए भी पैसे नहीं बचे। इस कारण उसकी पत्नी चल बसी। किसान की दुधमुँही बच्ची भी दवा के अभाव में मर गई। अतः किसान की पत्नी और उसकी बच्ची की मृत्यु के लिए किसी न किसी रूप में महाजन जिम्मेदार है।

**उ.10:–**

(क) यह उक्ति वंशीधर की है ? 2

(ख) यह महीने में मिलता तो एक बार है किन्तु रोज–रोज खर्च होकर घटता चला जाता है। इसलिए इसे पूर्णमासी का चाँद कहा गया है। 2

(ग) पिता का यह वक्तव्य पिता की मर्यादा के अनुकूल नहीं है । इसलिए इस वक्तव्य से सहमत नहीं हुआ जा सकता। 2

अथवा

(क) लेखक यह सोचने लगा कि कही बढ़ती हुई उम्र के किशोर बच्चे इसी दौरान बड़े और लंबे तो नहीं हो जाएंगे। यदि ऐसा हुआ तो दर्शकों को उन्हें पहचानने में परेशानी होगा। 2

(ख) फ़िल्म के निर्माण काल के दौरान अप्पू और दुर्गा के भारीर में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। अस्सी साल की चुन्नीवाला देवी भी इस दौरान मर सकती थी। परन्तु सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ। 2

(ग) फ़िल्म बनाने में लेखक को निम्नलिखित कठिनाइयाँ आईं– 2

1. बार–बार धन की कमी।
2. भ्यूटिंग में बहुत ज्यादा समय लगना।
3. पात्रों के बदलने या मृत्यु होने का खतरा मँडराना।

**उ11:–**

(क) भात खाने का दृश्य देने से पूर्व भूलों की मृत्यु हो गई। अतः उस दृश्य को पूरा करने के लिए भूलों से मिलते जुलते कुत्ते की आवश्यकता पड़ी, उसने गमले में पड़े भात को खाया तब जाकर दृश्य पूरा हुआ। 3

(ख) भारत के पशु हो या मनुश्य उनका यह स्वभाव है कि वे अपने साथ रहने वाले लोगों से सिर्फ गहरा लगाव रखते है। यही कारण है कि एक–दूसरे से विदा होते समय वे दुख अनुभव करते है। 3

(ग) मोहन कक्षा का होशियार बच्चा था। इसीलिए मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया दूसरी ओर धनराम स्वयं को नीची जाति का तथा मोहन को ऊँची जाति का समझता था। 3

(घ) स्पीति में संचार, बिजली, सड़क, दूरभाश आदि नहीं है। स्पीति में हरियाली और पेड़ पौधों का भी अभाव रहता है। वर्शा की कमी होने से फसलें भी बहुत कम होती है। वहाँ की चोटियाँ अत्यन्त दुर्गम है।

**उ..12:–** (क) 1. चित्रपट संगीत में प्राथमिक अवस्था के तालों का प्रयोग होता है। भाास्त्रीय संगीत के ताल भाास्त्रशुद्ध और परिपक्व होते है।

2. चित्रपट संगीत के ताल सुगम तथा लोचदार होते है। भाास्त्रीय संगीत के ताल गम्भीर होते है। 3

(ख) बरसात का सीधे रूप में मिलने वाला पानी पालरपानी कहलाता है। 3

(ग) तातुश ने बच्चों की पढ़ाई लिखाई के बारे में पूछा । लेखिका द्वारा आर्थिक रूप से असमर्थता जाहिर करने पर उन्होंने लेखिका की मदद की। लेखिका को इस बात के लिए प्रेरित किया वह अपने बच्चों का दाखिला करवा दे। 3

(घ) पार्क में आने वाली औरतें लेखिका से तरह –तरह के प्रश्न पूछती थी, जिनका उत्तर देना वह लाजिमी नहीं समझती थी। इसी कारण लेखिका ने पार्क में जाना छोड़ दिया।3

**उ..13ः— पालरपानी**— बरसात से सीधे मिलने वाला पानी। यह पानी नदियों , तालाबों, बड़े–बड़े गड्ढों में रूक जाता है । खुले में होने के कारण यह पानी जल्दी गंदा होता है। अधिकांश पानी वाश्प बनकर उड़ जाता है। बहुत सारा पानी जमीन के अंदर चला जाता है।

**पातालपानी** — जो पानी जमीन के अंदर जाकर भू–जल में मिल जाता है उसे पाताल पानी कहते है। इस पानी को कुओं, पम्पों तथा ट्यूबबेल द्वारा निकाला जाता है।

**रेजाणीपानी** —पालरपानी और पातालपानी के बीच का पानी रेजाणी पानी कहलाता है। धरातल से नीचे जाकर पातालपानी में न मिलकर बीच में ही नमी के रूप में रह जाने वाला पानी रेजाणीपानी कहलाता है। इस पानी को कुंइयों के माध्यम से इकट्ठा किया जाता है।

**अथवा**

यदि किसी व्यक्ति के मन में दृढ़निश्चय, लगन और निश्ठा हो तो उसके लिए कोई भी कार्य असंभव नहीं होता। लेखिका जो कि निहायत सामान्य परिवार से संबंध रखती थी। अपने व्यक्तिगत जीवन में जिसने अनेक प्रकार के संघर्शों का सामना किया। समाज के द्वारा जिस पर कतिपय लांछन लगाए गए उसके संबंध में तरह–तरह की प्रतिकूल बातें की गई किंतु प्रतिकूल परिस्थितियों से वह रंचमात्र भी विचलित नहीं हुई। जहाँ एक ओर परिश्रम करके उसने अपने बच्चों को पढ़ाया उनके लिए जीविकोपार्जन का साधन जुटाया एवं उन्हें हर प्रकार की सुविधा प्रदान की जो उनके विकास में सहायक हो सकता था। दूसरी ओर अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए , सतत् स्वाध्याय एवं कठिन परिश्रम के द्वारा उसने लेखिका का दर्जा हासिल किया। निश्चित रूप से बेबी हालदार का यह जीवन संघर्शरत एवं जुझारू व्यक्तित्व का जीवंत उदाहरण है।

# आदर्श प्रश्न पत्र

## हिंदी–केंद्रिक

कक्षा–ग्यारहवीं

समयः 3 घंटे पूर्णांक– 90

निर्देशः इस प्रश्न पत्र के तीन खण्ड हैं– 'क','ख','ग'। सभी प्रश्नों को क्रमानुसार कीजिए।

| | | |
|---|---|---|
| | **खंड 'क'** | |
| **प्र.1** | निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–<br>गाँधी जी और भगत सिंह लोक जीवन की कुंजी किस तत्व को मानते थे इसका समाधान करने की स्थिति यहाँ नही है। यहाँ तो इस संबध में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि भगत सिंह लोक–मानस में अपने अनूकुल वातावरण को अपने प्रयासो से निर्माण करने में दक्ष थे और गांधी जी सामाजिक परिस्थितियों से स्वंय उत्पन्न वातावरण को अपने अनुकुल करने में बेजोड़ थे। लोक मानस के मन में भाव होते हैं, पर भाषा नहीं होती। जो व्यक्ति भाव को भाषा देता है, लोक जीवन में उसे ही अपना नेता, अपना कर्णधार अपना आदर्श मानने की स्वेच्छा उत्पन्न हो जाती है। यह मेरी कुंजी का पूवार्द्ध है। उत्तरार्द्ध यह है कि लोक के मानस में आकांक्षा होती है,पर उस आकांक्षा को पूर्ण करने के प्रयत्नों की योजना नही होती। जो उसे योजना देता है, उस योजना पर चलने की प्रेरणा देता है, चलाता है और लक्ष्य पर पहुँचने से पहले रुकने, थकने नही देता, वह उसका आराध्य नेता और आदर्श पुरूष हो जाता है। इसी पृष्ठभूमि में मैं यह कहना चाहता हूँ कि लोक जीवन का बल अपने भौर्य, पराक्रम या त्याग–बलिदान से प्रदीप्त व्यक्तियों का आदर्श है, वह जीवित रूप में हो, साहित्य–इतिहास के रूप में। बस एक ही प्रश्न और लोक | |

| | | |
|---|---|---|
| | की सर्वोत्तम,सर्वोच्च आकांक्षा क्या है? मेरा अनुभव कहता है कि लोक की मूल जीवन–वृत्ति है आनन्द। आनन्द पनपता है भाांति में, और भाांति की लता पुष्पित | 2 |
| | होती है स्थिरता में। तो भाांत जीवन ही लोक की सर्वोत्तम–सर्वोच्च आकांक्षा हैं। | 2 |
| | (क) भगत सिंह की क्या विशेषता थी? | 2 |
| | (ख) महात्मा गांधी किस में बेजोड़ थे? | 2 |
| | (ग) भगत सिंह और महात्मा गांधी में क्या अतंर था? | 2 |
| प्र.2 | (घ) लोक जीवन किसे अपना आराध्य नेता और आदर्श पुरूष मानता है? | |
| | (ड़) उपर्युक्त गद्यांश का भीर्षक लिखिए? | |
| | निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– | |
| | मस्त योगी हैकि हम सुख देखकर सबका सुखी हैं,<br>कुछ अजब मन है कि हम दुख देखकर सबका दुखी है,<br>तुम हमारी चोटियों की बर्फ को यों मत कुरेदो,<br>दहकता लावा हृदय में है कि हम ज्वालामुखी हैं!<br>लास्य भी हमने किए हैं और तांड़व भी किए हैं,<br>वंश मीरा और शिव के, विष पिया है और जिये हैं,<br>दूध माँ का या कि चंदन या कि केसर जो समझ लो, | 1 |
| | यह हमारे देश की रज है, कि हम इसके लिए हैं! | 1 |
| | (क) इस कविता में किस देश के निवासियो की बात की गई है? कारण दीजिए। | 1 |
| | (ख) लास्य और तांड़व से आप क्या समझते हैं? | 1 |
| | (ग) इस कविता में भारतीयों की किस विशेषता को उजागर किया गया है? | 1 |
| | (घ) कविता का मूल भाव क्या है? | |
| प्र.3 | (ड.) कविता के लिए उचित भीर्षक दीजिए? | 10 |
| | **खंड 'ख'** | |
| | निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए– | |
| | (क) भ्रष्टाचार एक कलंक | |

| | | |
|---|---|---|
| | (ख) व्यायाम के लाभ | |
| **प्र.4** | (ग) देश के उत्थान में युवाओं का योगदान। | **5** |
| | (घ) जनसंख्या–विस्फोटः एक समस्या | |
| | सूचना और संचार के माध्यमो की बढ़ती लोकप्रियता के कारण पत्र–लेखन पीछे छूट गया है। पत्र लेखन के महत्व को रेखांकित करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। | |
| | **अथवा** | |
| **प्र.5** | किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को एक पत्र लिखिए जिसमें ''अपराधी तत्वों के राजनीति में आने से लोकतंत्र को खतरा हो गया है'' का वर्णन किया गया हो। | **1** |
| | निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए– | **1** |
| | (क) छह ककारों से क्या तात्पर्य है? | **1** |
| | (ख) उल्टा पिरामिड़ भौली पर प्रकाश ड़ालिए? | **1** |
| | (ग) अंशकालिक पत्रकार से आप क्या समझते है? | **1** |
| **प्र.6** | (घ) समाचारों को संकलित करने वाले को क्या कहा जाता है? | **5** |
| | (ङ) फीचर लेखन की प्रमुख विशेषता क्या है? | |
| **प्र.7** | 'भारत के बदलते स्वरूप पर' पर एक फीचर लिखिए। | |
| | **खंड 'ग'** | |
| | निम्नलिखित मे से किसी एक काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए? | |
| | हम तौ एक एक करि जानां<br>दोई कहैं तिनहीं को दोजग जिन नाहिंन पहिचानां।।<br>एकै पवन एक ही पानीं एकै जोति समानां।।<br>एकै खाक गढ़े सब भांड़े एकै कोंहरां सानां।।<br>जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।<br>सब घटि अंतरि तूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।। | **2** |
| | माया देखि के जगत लुभांनां काहे रे नर गरबानां। | **2** |

| | | |
|---|---|---|
| | निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवानां।। | **2** |
| | (क) कबीर परमात्मा के किस रूप में आस्था रखते हैं? | **2** |
| | (ख) 'कबीर ने किन लोगों को नरक का अधिकारी माना है? | |
| | (ग) कबीर ने किस प्रकार सिद्ध किया है कि ईश्वर एक है? | |
| | (घ) कबीर के अनुसार प्रभु को जानने के लिए क्या आवश्यक है? | |
| | **अथवा** | |
| | अंधकार की गुहा सरीखी<br>उन आँखों से डरता है मन<br>भरा दूर तक उनमें दारूण<br>दैन्य दुख का नीरव रोदन | |
| | वह स्वाधीन किसान रहा?<br>अभिमान भरा आँखों में इसका,<br>छोड़ उसे मझधार आज | **2** |
| | संसार कगार सदृश बह खिसका। | **2** |
| | | **2** |
| | (क) कवि को किसकी आँखें गुहा सरीखी लगती हैं और क्यों? | |
| | (ख) किसान की आँखों में क्या–क्या समाया हुआ है? | **2** |
| **प्र.8** | (ग) 'वह स्वाधीन किसान रहा, अभिमान भरा आँखों में इसका'–इस काव्य–पंक्ति में किसान के | |
| | जीवन को कैसा बताया गया है? | |
| | (घ) किसान के अतीत और वर्तमान में क्या अंतर आ गया है? | |
| | निम्नलिखित में से किसी एक काव्याँश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– | |
| | नाचने के लिए खुला आंगन | **3** |
| | गाने के लिए गीत | **3** |
| | हँसने के लिए थोड़ी सी खिलखिलाहट | |

| | | |
|---|---|---|
| | रोने के लिए मुट्ठी भर एकांत | |
| | (क) भाषा की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। | |
| | (ख) ''मुट्ठी भर एकांत'' का सौंदर्य स्पश्ट कीजिए। | **3** |
| | **अथवा** | **3** |
| **प्र.9** | अंसुवन जल सींचि सींचि प्रेम–बेलि बौयी। | |
| | अब त बेलि फैलि गयी, आणंद–फल होयी।। | **2** |
| | (क) काव्यांश के रूपक का निहितार्थ लिखिए | **2** |
| | (ख) पंक्तियो में आए अलंकार बताइए। | **2** |
| **प्र10** | निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए– | |
| | (क) कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं? | |
| | (ख) कवि किसान की ऑखो से क्यों ड़रता है ? | |
| | (ग) आओ मिलकर बचाएँ में कवयित्री क्या बचाने की प्रेरणा देती हैं? | |
| | निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– | |
| | आगे भी इस देश में जो प्रधान भाासक आए ,अंत में उनको जाना पड़ा। | |
| | इससे आपका जाना भी परंपरा की चाल से कुछ अलग नही है, तथापि भाासन–काल का नाटक घोर दुखांत है ,और अधिक आश्चर्य की बात यह है कि दर्शक तो क्या, | |
| | स्वंय सूत्रधार भी नही जानता था कि उसने जो खेल सुखांत समझकर खेलना आरंभ | **2** |
| | किया था, वह दुखांत हो जावेगा। जिसके आदि में सुख था ,मध्य में सीमा से बाहर | **2** |
| | सुख था ,उसका अंत इतने घोर दुख के साथ कैसे हुआ? आह! घमंडी खिलाड़ी | **2** |
| | समझता हैं कि दूसरो को अपनी लीला दिखाता हूँ। किंतु परदे के पीछे एक और ही लीलामय की लीला हो रही है, यह उसे खबर नहीं। | |
| | (क) कर्जन के भाासन काल का नाटक दुखांत क्यों है? | |
| | (ख) सूत्रधार किसे कहा गया है? उसके द्वारा खेल खेलने का क्या अभिप्राय है ? | |
| | (ग) 'और ही लीलामय की लीला' से लेखक किस की ओर संकेत करना चाहता है? | |
| | **अथवा** | |

| | | |
|---|---|---|
| | यह पावस यहॉ नही पहुँचता है। कालीदास की बर्षा की भोभा विन्ध्याचल में है। हिमांचल की इन मध्य की घाटियो में नही है। मैं नही जानता कि इसका लालित्य लाहुल–स्पीति के नर–नारी समझ भी पाएंगे या नहीं। वर्षा उनके संवेदन का अंग नही है। वह यह जानते नही हैं कि 'बरसात में नदियॉ बहती है, बादल बरसते, मस्त हाथी चिंघाड़ते हैं, जंगल हरे–भरे हो जाते है, अपने प्यारो से बिछुड़ी हुई स्त्रियाँ रोती–कलपती है, मोर नाचते हैं और बंदर चुप मारकर छिपते हैं। | 2 |
| | अगर कालीदास यहॉ आकर कहें कि' अपने बहुत से सुदंर गुणो से सुहानी लगने | 2 |
| | वाली, स्त्रियों का जी खिलाने वाली ,पेड़ो की टहनियो और बेलो की सच्ची सखी | 2 |
| | तथा सभी जीवो का प्राण बनी हुई वर्षा ऋतु आपके मन की सब साधें पूरी करें' तो | |
| **प्र011** | स्पीति के नर–नारी यही पूछेंगे कि यह देवता कौन है? कहॉ रहता है? यहॉ क्यों | 9 |
| | नही आता ह्वै? स्पीति में कभी–कभी बारिश होती है। वर्षा ऋतु यहॉ मन की साध पूरा नही करती। धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है। | |
| | (क) इस निबंध तथा लेखक का नाम बताइए | |
| | (ख) लेखक को क्यों लगता है कि लाहुल–स्पीति के लोग कालिदास के प्रसंग को नही समझ पाऍगे। | |
| | (ग) कालिदास ने वर्षा ऋतु का किस प्रकार गुणगान किया है ? | |
| **प्र.12** | निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए– | **9** |
| | (क) 'नमक का दरोगा' पाठ के आधार पर वंशीधर की किन्ही तीन चारित्रिक विशेषताओ को लिखिए ? | |
| | (ख) लेखिका ने मियॉ नसीरूद्दीन को नानाबाइयों का मसीहा कहा, आप उससे कहॉ तक सहमत हैं ? | |
| | (ग) धनराम मोहन को अपना प्रतिद्वन्दी क्यों नही समझता था? | |
| **प्र.13** | (घ) 'जामुन का पेड़' के आधार पर सरकारी कर्मचारियों की कार्यप्रणाली का उल्लेख कीजिए। | **6** |
| | 'वितान' पाठ्य पुस्तक के आधार पर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए– | |

| | | |
|---|---|---|
| | (क) चेजारेा के साथ गॉव समाज के व्यवहार में पहले की तुलना में आज क्या फर्क आया है, पाठ के आधार पर बताइए ?<br>(ख) भाास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत के तीन अन्तर बताइए।<br>(ग) भूमि के अंदर भीषण गर्मी में चेजारो के लिए ताजी हवा का प्रबंध कैसे किया जाता है?<br>(घ) तातुश लेखिका को देखकर प्रसन्न क्यों हो उठते थे?<br>निम्नलिखित में से किसी एक प्रन का उत्तर दीजिए–<br>(क) राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?<br>(ख) ''आलो आंधारि'' नामक पाठ से जनसामान्य के लिए क्या संदेश संप्रेशित किया गया है?<br>नोटः– 10 अंकों के मौखिक परीक्षण का आयोजन विशयाध्यापक स्वयं करेंगे। | |

*****समाप्त*****